

बाल विज्ञान पत्रिका, सितम्बर 2023

चकमक

गोला बोला

मेरा पन्ना विशेषांक

नवम्बर-दिसम्बर 2023



तुम भी आ बनीओ

फिल्म चर्चा

किताबें कुछ कहती हैं...

तुम भी जानो

माथा पच्ची



पहेली
चित्र

चकमक

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर अंक विशेषांक होता है। इस बार विशेषांक के साथ यह नवम्बर और दिसम्बर माह का संयुक्त अंक भी होगा। यानी इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे। तो इस अंक के लिए तुम्हें खास तौर से अपनी रचनाएँ भेजनी हैं।

अपनी खुद की रची कहानी, कविताओं, किस्सों, लेखों, चित्रों, चुटकुले, पेंटिंग व कॉमिक के साथ-साथ तुम चकमक के अन्य कॉलम जैसे माथापच्ची, चित्रपहेली, तुम भी बनाओ, अन्तर ढूँढो, तुम भी जानो के लिए भी रचनाएँ भेज सकते हो। इनके अलावा तुम दिए गए किसी भी विषय पर अपनी रचना गढ़ सकते हो।

किस्से-कहानियों-कविताओं या चित्र अथवा कॉमिक के रूप में तुम्हारी रचनाओं के लिए कुछ विषय ये रहे:

- अपने घर या आसपास के बड़े-बूढ़ों से बात करके तुम अपने क्षेत्र की लोककथाओं के बारे में पता कर सकते हो।
- अपना या अपने किसी भी पसन्दीदा व्यक्ति या जानवर का पोर्ट्रेट। पोर्ट्रेट का चित्र खड़े पन्ने  में बनाना, आड़े  में नहीं।
- एक चिट्ठी – यदि तुम किसी को भी याद करते हो और उनसे कुछ कहना चाहते हो, तो उन्हें तुम चिट्ठी लिख सकते हो। वो कोई भी हो सकते हैं – दूर चले गए दोस्त या रिश्तेदार, कोई जगह या कोई मौसम या गुजरा हुआ वक्त, जिसे तुम कुछ कहना चाहो।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पता जरूर लिखना। रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख है - 30 सितम्बर।

रचनाएँ तुम 9753011077 पर वॉट्सऐप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

इस बार • • • • •

चकमक

अकरू के सींग मुड़े हुए...	4
- अम्बिका अय्यादुरई और ममता पांड्या	8
कोयला - सुशील शुक्ल	10
भूलभुलैया	11
फिल्म चर्चा - सुजाता - निधि गुलाटी	14
सन्तरा - प्रभात	16
बेतवा नदी के किनारे... - भाग 3	19
- आस्था चौधरी	22
क्यों-क्यों	23
क्यों-क्यों - हमारा जवाब	28
गणित है मज़ेदार - चित्रों के जरिए गुणा - भाग 1	30
- आलोका कान्हेरे	32
चित्रपहेली	34
अमन की कुछ बातें - व्यक्ति पर बहस या विषय पर	36
- अमन मदान	43
लम्बी मेरी गुथ - दीक्षिता ठाकुर	44
माथापच्ची	
मेरा पन्ना	
तुम भी जानो	
गोला बोला - वरुण ग़ोवर	



आवरण: प्रिया कुरियन

सम्पादक	डिज़ाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	डिज़ाइन सहयोग
कविता तिवारी	इशिता देबनाथ बिस्वास
विज्ञान सलाहकार	सलाहकार
सुशील जोशी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
उमा सुधीर	शशि सबलोक

वितरण
ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

आकरु के सींग मुड़े हुए क्यों होते हैं?

अम्बिका अय्यादुरई और ममता पांड्या

चित्र: श्रोबोन्तिका दासगुप्ता

अनुवाद: विनता विश्वनाथन



वो जीहा ताचो का दिन का सबसे प्रिय समय था। एटाबे गाँव, जहाँ वह रहता था, में सन्नाटा छाया हुआ था। उसके परिवार के लोगों के दिन के काम खतम हो गए थे। जीहा अपनी नानी के साथ आग के सामने बैठा था, “नाया, आज कौन-सी कहानी सुनाएँगी मुझे?”

जीहा को नाया की कहानियाँ बेहद पसन्द थीं। नाया की कहानियाँ उनके लोगों की, इदु मिशमी की कहानियाँ थीं। यह कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई गई थीं। जीहा की पसन्दीदा कहानियाँ उन जानवरों की थीं, जो उसके छोटे-से गाँव के आसपास के जंगलों और पहाड़ों पर रहते थे।

नाया का चेहरा आग की लौ में दमक रहा था। “सोचने दो मुझे। चलो, आज मैं तुम्हें आकरु की कहानी सुनाती हूँ।” उन्होंने कहा।

“आकरु क्या होता है, नाया?”

“आकरु ऊँचे पहाड़ों पर रहता है। वह अजीब-सा दिखने वाला जानवर है – बकरी और एंटीलोप का मिला-जुला रूप। उसका शरीर भारी और बालदार होता है। उसके कन्धे झुके हुए और गर्दन छोटी व मोटी होती है। उसकी टाँगें और पूँछ भी छोटी होती हैं। जो चीज़ उसे और भी अजीब

बनाती है, वो है उसकी नाक जो एक काले सूजे हुए बल्ब जैसी होती है।”

नन्हा जीहा अपनी आँखें बन्द करके मन ही मन आकरु का एक चित्र उकेरता है, बिलकुल वैसा जैसे नाया ने बताया था। “क्या उसके सींग होते हैं, नाया? मंचो और माएँ जैसे?”

“नहीं,” नाया कहती हैं। “आकरु के सींग उनके जैसे नहीं होते।” जानवरों की खोपड़ियों वाले बोर्ड में लगे छोटे मुड़े हुए सींगों की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने कहा, “आकरु के सींग हमेशा से ऐसे मुड़े हुए नहीं थे। कहते हैं कि बहुत समय पहले वे लम्बे और सीधे हुआ करते थे।”

आश्चर्य से जीहा की आँखें बड़ी हो गईं। “वो मुड़ कैसे गए, नाया?”

नाया गम्भीरता से सोचने लगीं। “कई साल पहले, इदु मिशमी आकरु को लेकर उलझन में रहते। वे सोचते, “किस किस्म का जानवर है ये आकरु?” एक इदु मिशमी आदमी बोला, “उसकी ढलान जैसी पीठ देखो। किसी और जानवर की पीठ तो ऐसी नहीं है।”

दूसरा आदमी बोला, “उसका चेहरा तो देखो। बकरी जैसा दिखता है। लेकिन क्या वो बकरी है?”

कोई और बोला, “लेकिन इसके सींग तो बकरी जैसे नहीं हैं।”

एक युवा मिशमी बोला, “ये तो ऐसा दिखता है जैसे अलग-अलग जानवरों के अलग-अलग अंगों को जोड़कर बनाया गया है।” उसकी बात सुनकर सब हँसने लगे। बुजुर्ग शिकारी बोला, “आकरु का मज़ाक मत उड़ाना। गोलों (पहाड़ों की आत्मा) को गुस्सा आ जाएगा। सब आकरु उसी के तो हैं, हैं ना?” “नहीं! वे हमारे हैं, इदु मिशमी लोगों के।” बाकियों ने कहा।

“फिर क्या हुआ, नाया?” धीरे-से लेटते हुए अपना सिर नानी की गोदी में रखते हुए जीहा ने पूछा।

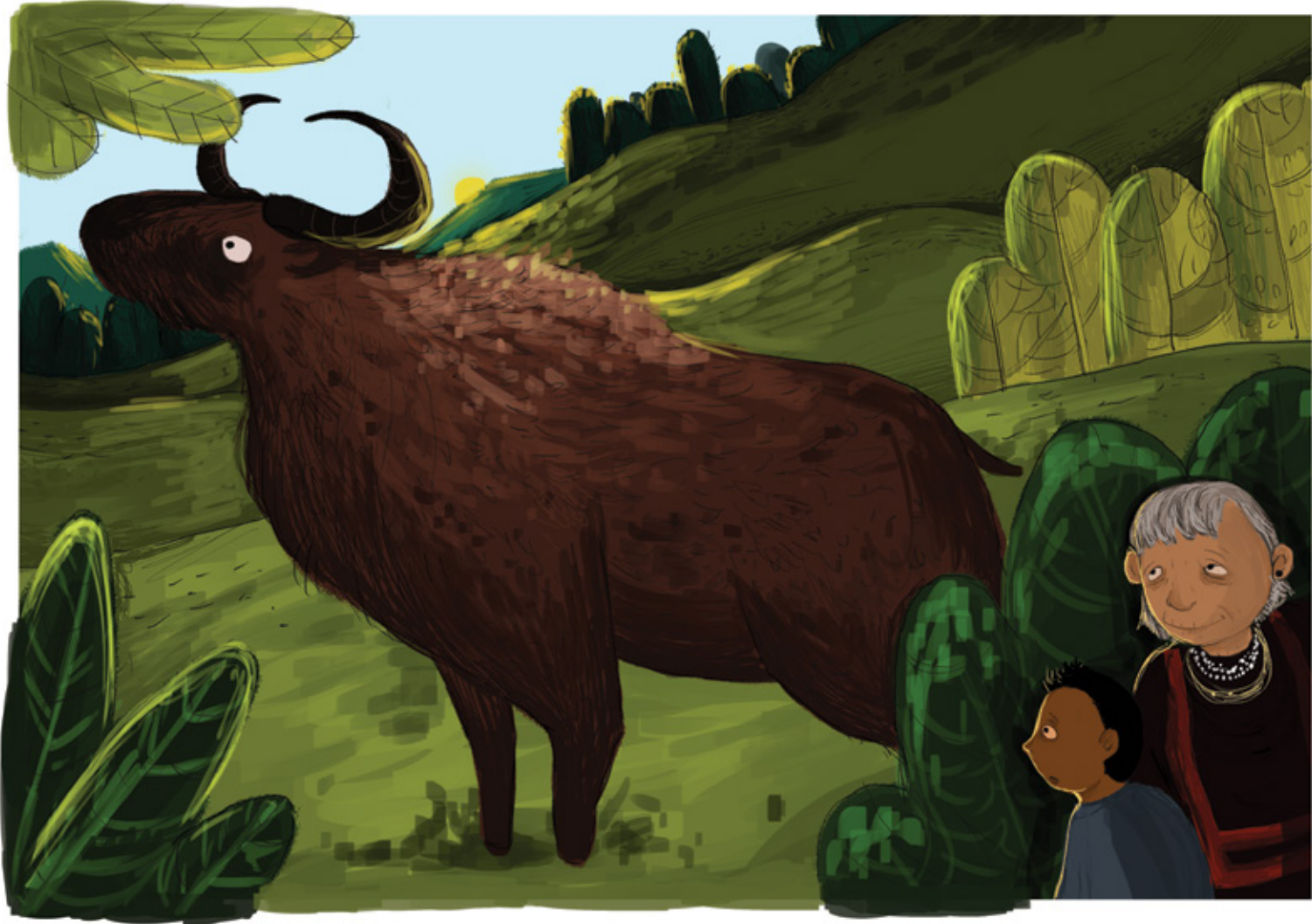
“फिर? इदु लोग और गोलों ये दावा करते रहे कि आकरु उनका है। काफी समय तक ऐसे ही चलता

रहा। फिर तय हुआ कि इदु लोगों और गोलों के बीच एक मुकाबला होगा – रस्साकशी का।”

इदु लोगों ने दिबांग वैली के सारे लोगों को रस्साकशी में भाग लेने के लिए बुलाया।

उस सुबह गोलों और इदु लोग एक खुले मैदान में मिले। मैदान के बीच में एक आकरु खड़ा था।

सारे इदु जानवर के पीछे खड़े हो गए और उनमें से सबसे ताकतवर शिकारी ने आकरु की पूँछ को कसकर पकड़ लिया। फिर क्या बाकी के सारे इदु लोग हो-हल्ला करते हुए उसके पीछे एक के बाद एक लग गए – सामनेवाले की कमर को कसकर पकड़े हुए। पहाड़ी आत्मा गोलों बहादुरी से आकरु के सामने अकेले खड़ी थी। उसने



आकरु के लम्बे और सीधे सींगों को एक-एक हाथ में पकड़ा था।

दोनों पक्ष आकरु को अपनी तरफ खींचने लगे। आकरु भी ताकतवर और गठीला था। दोनों तरफ से उसे खींचा जा रहा था। लेकिन वो अपनी जगह पर डटा रहा। गोलों और इदु के बीच कड़ा मुकाबला हुआ।

आकरु के सींगों पर गोलों की पकड़ बनी रही, बावजूद इसके कि आकरु अपना सिर पीछे की ओर झटक रहा था और इदु लोग उसे पूरी ताकत लगाकर खींच रहे थे। जैसे-जैसे उसे आगे खींचा जा रहा था, उसके भारी-भरकम सींग ऊपर और पीछे की तरफ मुड़ते जा रहे थे।

इदु लोगों को काफी संघर्ष करना पड़ा। पूँछ को पकड़े रहने के लिए उन्होंने अपनी पूरी ताकत

लगा दी। लेकिन शक्तिशाली गोलों के सामने उनकी ताकत कुछ नहीं थी! जब तक आकरु के सींग मुड़े, उनके हाथों से पूँछ फिसलने लगी। फिर अचानक टूटकर उसका एक बड़ा हिस्सा उनके हाथों में आ गया। और आकरु की पीठ पर सिर्फ एक टूँठ जैसा रह गया!

गोलों जीता और उस समय से गोलों ने घोषित किया कि आकरु उसी का है।

और यही है कहानी कि आकरु के सींग मुड़ कैसे गए।

“नाया, क्या आपने कभी आकरु देखा है?” जीहा ने पूछा।

“बहुत कम लोगों ने आकरु को देखा है। ऊपर जहाँ ज़मीन पर पूरी तरह बर्फ बिछी होती है, वहाँ तक चढ़कर जाने वाले शिकारी अक्सर आकरु की





बातें करते हैं। कुछ कहते हैं कि वहाँ वे बड़ी तादाद में घूमते मिलते हैं, 300 के झुण्ड में भी! किसे पता ये सच है या नहीं? मैंने उसे कभी नहीं देखा है,” नाया ने कहा।

जीहा अब आकरु को देखने के लिए काफी उतावला था। उसने तय किया कि जब वो बड़ा होगा, तो अपने पिता के साथ दिबांग के ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ेगा। क्या पता शायद वहाँ उसे आकरु दिख जाए। और वो नाया की गोदी में ही सो गया – आकरु और बर्फ से लदी हुई पहाड़ों के सपने देखते हुए।

ये इदु मिश्मी की उन अनगिनत कहानियों में से एक है जिन्हें वे सुनाते हैं। उनकी लिखित भाषा नहीं है। इसलिए उनकी ज़्यादातर कहानियाँ मौखिक हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं। इदु मिश्मी की मौखिक संस्कृति स्तनधारी जानवरों, पक्षियों, टिड्डों और मेंढ़कों की कहानियों से भरी है। यह उनके प्राकृतिक परिवेश के बारे में हमें काफी कुछ बताती हैं।

ताकिन उन जानवरों में से एक है जो इदु मिश्मि की मैथिक कहानियों में शामिल है। उनके इलाके में इसे आकरु कहते हैं। अरुणाचल प्रदेश में ताकिन तवांग की ऊपरी चोटियों पर, सियांग घाटी, निचली दिबांग वैली, अन्जॉव और दक्षिणी लोहित ज़िलों में मिलते हैं। लेकिन इनकी आबादी घट रही है।

मिश्मि अरुणाचल प्रदेश के 26 मुख्य जनजातीय समूहों में से एक हैं। इनके तीन उपसमूह हैं, जिनमें इदु मिश्मि शामिल हैं। दिबांग वैली भारत का सबसे कम आबादी वाला ज़िला है – यहाँ 14,000 इदु मिश्मि रहते हैं। जानवर इनकी ज़िन्दगी और संस्कृति का अभिन्न अंग हैं।

ये उन कई कहानियों में से एक है जो दिबांग वैली ज़िले में रहने वाले मेरे एक दोस्त और इदु मिश्मि अनन्ता मेमे ने सुनाई थी। हमने इसे यहाँ फिर से कहा है ताकि ज़्यादा लोग इसे जान सकें।

समर्पण

मैं (अम्बिका) जीहा ताचो से 2012 में मिली जब मैंने अपनी पीएचडी के लिए अरुणाचल प्रदेश की दिबांग वैली में काम करना शुरू किया। मैं उसके परिवार के साथ, एक साल तक जीहा के घर में रही। वो 10 साल का था। हम अच्छे दोस्त बन गए थे। हम साथ में बर्डवाचिंग करते, फलों को तोड़ते और खाना बनाते थे। 2017 में एटाबे गाँव के पास एक दुखद दुर्घटना में जीवा की ज़िन्दगी समय से पहले खतम हो गई। ये कहानी उसी के नाम।

ये कहानी *करंट कॉन्ज़र्वेशन* पत्रिका में 8 मार्च 2021 को छपी थी।

<https://www.currentconservation.org/tales-from-dibang-valley-why-are-the-akrus-horns-curved/>





कोयला

सुशील शुक्ल

चित्र: प्रिया कुरियन

गाँव में एक सेठ था। वह खड़ा होता तो लोग उसके आसपास जगह छोड़कर खड़े होते। चलते तो जगह छोड़कर चलते। लोगों को लगता था कि उस खाली छूटी जगह में भी सेठ है। वे ज़रा-सा आगे बढ़ेंगे तो सेठ से टकरा जाएँगे। सेठ जीप में पूरी सीट पर अकेला बैठता। उतरता तो दोगुनी जगह से उतरता।

बारिश होती तो एक आदमी छाता लेकर उसके साथ चलता। वह इस बात का ख्याल रखता कि सेठ से दूरी बनी रहे। बारिश में भीगता। छाते से पानी की एक धार भी उसके ऊपर गिरती रहती। सेठ को बचाए रखकर वह दोगुना भीगता रहता।

बिजली उन दिनों आई नहीं थी। गर्मियों में वह आदमी सेठ को पंखा झालता रहता। पसीने-पसीने होता रहता। सेठ अपने काम में लगा रहता।

आज मैं बिस्तर पर पीठ के बल लेटा था। मेरे ठीक ऊपर पंखा चल रहा था। कौन चला रहा है यह पंखा? वह आदमी दिख क्यों नहीं रहा है? मैंने पंखा बन्द किया। कुर्सी पर चढ़ा और पंखे की पीठ देखी। उसमें ग्रीज़ लगा था। छूकर देखा। काफी गर्म था। जैसे, मैंने उस सेठ को पंखा झालने वाले आदमी के माथे पर हाथ रख दिया हो। हथेली पर कालिख-सी पुत गई थी। उसमें कोयले की खदान में खड़ा वही आदमी नज़र आया।

इतनी दूर खदान में खड़ा आदमी पंखा झल रहा था। मुझे देख कहने लगा मालिक, अगर आपके घर ही कोयले से बिजली बनाऊँगा तो दिक्कत होगी। आपके फेफड़ों में धुआँ भर जाएगा...





सुजाता फिल्म एक मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार की इकलौती बच्ची रमा के जन्मदिन से शुरू होती है। उसी शाम कुछ लोग एक दलित नवजात बच्ची को लेकर उनके घर आते हैं। उस बच्ची के माँ-पिता अब ज़िन्दा नहीं हैं। वह परिवार इस बच्ची को कुछ दिन अपने घर रखने के लिए तैयार हो जाता है। वे लोग इसका नाम सुजाता रखते हैं। वे काफी कोशिश करते हैं कि बच्ची को कोई और गोद ले ले। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। सुजाता बाकी बच्चों की तरह ही उत्सुक है। वह समझ ही नहीं पाती कि क्यों उसकी अम्मी और बापू उसके और रमा के साथ अलग-अलग व्यवहार करते हैं, क्यों कभी उसका जन्मदिन नहीं मनाया जाता। और क्यों केवल रमा के लिए ही शिक्षक घर आते हैं, उसके लिए नहीं।

कुछ दिन कुछ सालों में बदल जाते हैं। और काफी जद्दोजहद के बाद सुजाता परिवार का हिस्सा बन ही जाती है। फिल्म देखते हुए बहुत बार लगता है कि अम्मी और बापू रमा की तरह सुजाता को भी प्यार करना चाहते हैं, पर सामाजिक बन्धिशें मानो उनका रास्ता रोक देती हैं। उन्होंने सुजाता को पाला है, तो वह भी तो उनकी बेटी ही हुई ना? पूरी फिल्म में लगता है कि यह सवाल उन्हें परेशान तो कर रहा है, पर वे इसका सामना नहीं करना चाहते। खैर, फिल्म के अन्त तक वे सुजाता को पूरी तरह से अपना लेते हैं। यह सब कैसे होता है, वो तुम फिल्म में देख लेना।

अब बात करते हैं फिल्म के एक तकनीकी हिस्से — रोशनी सम्पादन की। एक बार **चकमक** नीचे रखकर अपने आसपास के

कमरे पर एक भरपूर नज़र डालो। ध्यान-से देखो कहाँ-कहाँ रोशनी है, कहाँ पर रोशनी कम है और कहाँ-कहाँ धूप-छाँव का एक खेल-सा है। गौर करो खिड़की के पास धूप-छाँव कैसे खेल रही है। रोशनी के इस पहलू का इस्तेमाल चित्रकार अक्सर अपने चित्रों में करते हैं। फिल्म पर वापिस लौटने से पहले इसके बारे में थोड़ी बात करते हैं।

कियारैस्कूरो — रोशनी और छाया की तकनीक

यूरोपीय देशों में चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी के दौरान असाधारण रचनात्मक विकास हुआ। इसका एक हिस्सा था पेंटिंग/चित्रकला में रोशनी और छाया की तकनीक। इटली के कैरावाजियो, लीयनार्डो दा विंची और रेम्ब्रांट इस समय के सबसे प्रसिद्ध चित्रकार थे। ये सभी अपने चित्रों में रोशनी और परछाई के काफी खूबसूरत प्रयोग के लिए जाने जाते हैं।

फिल्म चर्चा

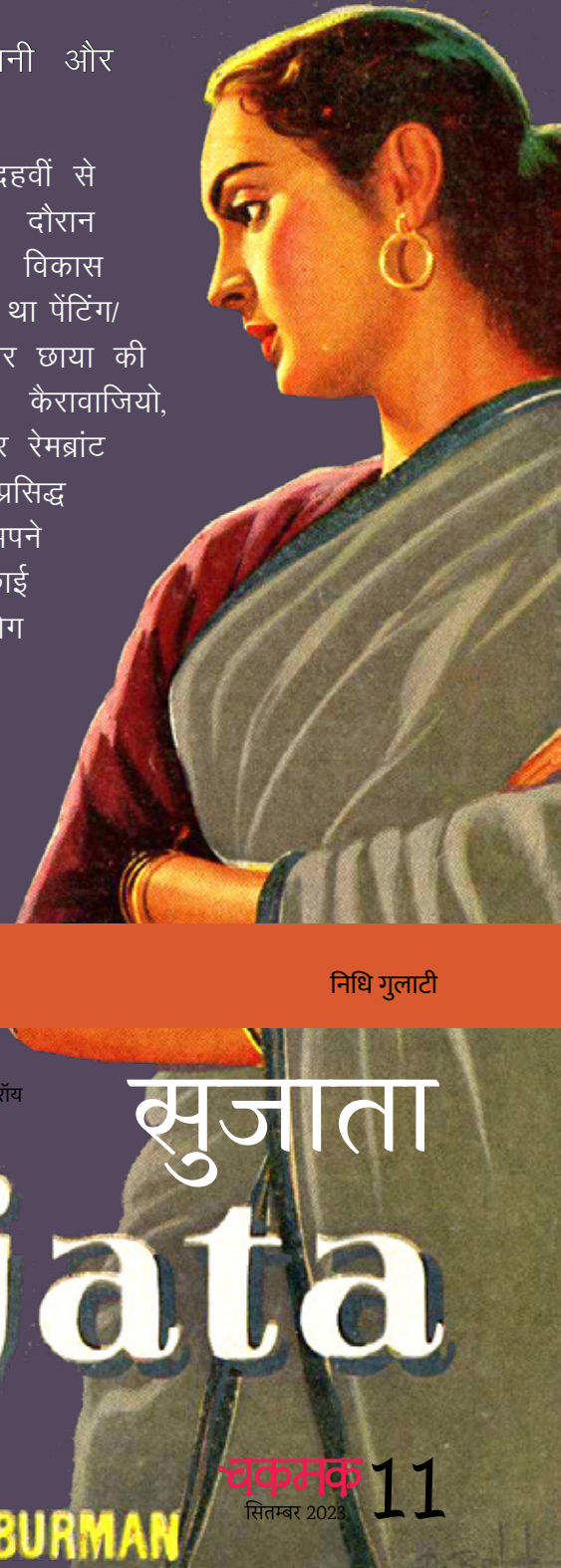
निधि गुलाटी

रिलीज सन: 1959
निर्माता और निर्देशक: बिमल रॉय
भाषा: हिन्दी
संगीत: एस डी बर्मन

सुजाता Suojata

BIMAL ROY S.D.BURMAN

चकमक 11
सितम्बर 2023



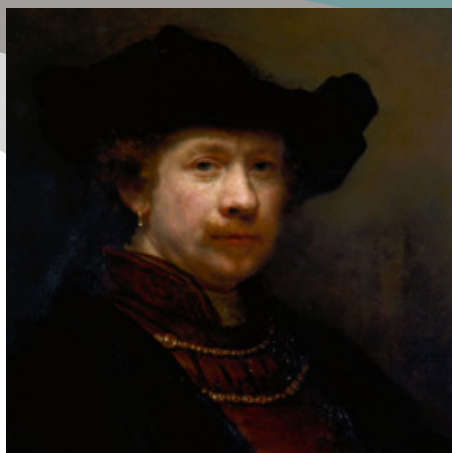
नीचे रेम्ब्रांट के दो पोर्ट्रेट दिए गए हैं। देखो इनमें किस तरह उन्होंने स्पोर्ट लाइट से अपने चेहरे के कुछ हिस्सों पर रोशनी का एक दायरा बनाया है। दाएँ गाल के नीचे रोशनी का एक तिकोन बन रहा है ना? आगे पढ़ने से पहले एक बार उठो और शीशे में अलग-अलग पहलुओं से अपने आप को देखो, खास कर अपने चेहरे को। क्या आँखों के नीचे कभी रोशनी जाती है? सही कह रहे हो, तुम्हारे प्रतिबिम्ब में चेहरे के इस हिस्से पर रोशनी नहीं पहुँचती है। लेकिन रेम्ब्रांट अपनी तस्वीरों में यह दिखाने लगे थे। इस तकनीक को कियारैस्कूरो कहते हैं। बोलते हुए मुँह भर देता है ना यह इतालवी शब्द। यह दो शब्दों के मेल से बना है – “कियारो” मतलब “उजला” और “ओस्कूरो” मतलब “अँधेरा” या “गहरा”।

पेंटिंग या तस्वीर में रोशनी और अँधेरे के विपरीत इस्तेमाल से तस्वीर बहुत नाटकीयता से उभरकर सामने आती है और नज़र उस पर टिक जाती है। यह काम कियारैस्कूरो तकनीक करती है क्योंकि काली और सफेद छवियों में अलग-अलग रंगों की कमी होती है। कियारैस्कूरो से बनी तीखी विपरीतता से तस्वीर में विरोधाभास (यानी कि दो अलग अनुभव या भाव) पैदा होता है। साथ ही यह सफेद व काले के बीच अन्य रंगतों की सम्भावना को पैदा करती है। इससे गहराई और छायाएँ भी बनती हैं जिन्हें सिर्फ दो रंगों में दिखा पाना मुश्किल है। खुद ही सोचो, सिर्फ काले रंग का इस्तेमाल कर तुम किसी चित्र में क्या अलग-अलग भाव उत्पन्न कर सकते हो? तो, कियारैस्कूरो कला से जुड़ी एक तकनीक है। एक तरह से यह तस्वीरों को जीवन्त दिखाने का तरीका है।

क्या तुम लीयनार्डो दा विंची के काम से वाकिफ हो? शायद मोना लिसा को पहचानते होगे। उनके बने चित्रों को कभी अपने पुस्तकालय या इंटरनेट पर ढूँढना। उन्होंने कहा था, “एक चित्रकार को हर कैनवास को शुरुआत में काले रंग से पूरी तरह पोत देना चाहिए। क्योंकि प्रकृति में सब कुछ अँधेरे में होता है, सिवाय उन जगहों के जहाँ रोशनी ने कुछ खास तरीके से प्रकट किया हो।” यह सचमुच सोचने वाली बात है। क्या हम रोशनी की दुनिया में रहते हैं जहाँ काफी कुछ हमसे छिपा है? या हम अँधेरे की दुनिया में रहते हैं जहाँ कुछ-कुछ ही दिखता है?

लीयनार्डो दा विंची

रेम्ब्रांट के दो पोर्ट्रेट




फिल्म में कियारैस्कूरो का कमाल

निर्देशक बिमल रॉय ने भी *सुजाता* फिल्म में इस कला तकनीक का इस्तेमाल किया है। फिल्म से ली गई इन कुछ तस्वीरों को ध्यान-से देखो। जब भी कहानी किसी दुखी मोड़ पर होती या फिर उसमें भरपूर आनन्द दिखाना होता, तो निर्देशक काला, सफेद और भूरे तीनों रंगों के कियारैस्कूरो पैटर्न गढ़ने लगते। मसलन, इस खिड़की की तस्वीर को देखो। और इन तस्वीरों में देखो कि कैसे वे दृश्य को चेहरे पर रोशनी केन्द्रित करके शुरू करते हैं। क्या यह रेम्ब्रान्ट की पेंटिंग से अलग है? किस तरह यह बिना रंगों की 2-D तस्वीर होते हुए भी हमें 3-D का एहसास दिलाती है।

अब उस तस्वीर को देखो जहाँ घर के आँगन में रमा और सुजाता खड़ी हैं। इसमें रोशनी और अँधेरे के बीच फर्क को देखो, कैसे एक सटीक लकीर-सी बन रही है। दोनों में से कौन अँधेरे में खड़ी है और कौन रोशनी में? क्या दलित लड़की अँधेरे में है, और ऊँची जाति की लड़की रोशनी में? ऐसा लगता है कि यह कॉन्ट्रास्ट हमारे समाज के सबसे अँधेरे पहलू को दर्शाता है – लोगों के बीच का फर्क, चाहे वह जाति का हो या सामाजिक-आर्थिक वर्ग का। बिमल रॉय रोशनी और छाया के कियारैस्कूरो से इसे एक चित्र में दिखा पाए। दरअसल रोशनी और अँधेरे का यह खेल हमारे भीतर के अँधेरे की ओर इशारा करता है, चाहे वह सामाजिक हो या व्यक्तिगत। क्या हमारे अन्दर कुछ अँधेरे हिस्से हैं?

रमा और सुजाता की माँ नर्मदिल होते हुए भी रीति-रिवाजों और नियमों को तोड़ नहीं पातीं। अपनी भावनाओं से अपने दृष्टिकोण को आसानी से बदल नहीं पातीं। बिमल रॉय की यह फिल्म इसी व्यक्तिगत और सामाजिक विभेद की सशक्त समीक्षा है। फिल्म देखना और हमें बताना कि तुम्हें फिल्म के और रोशनी-सम्पादन के कौन-से पहलू पसन्द आए।





सन्तरा

प्रभात

चित्र: शुभम लखेरा

बाबा उस घर में चिड़ियों, मकड़ियों, चींटियों और तिलचट्टों के साथ रहते थे। मैं और सन्तरा उनसे मिलने पहुँचे थे। “चिड़िया का एक बच्चा मर गया।” उन्होंने दुखी मन से बताया। यह भी कि “अभी उसके पंख नहीं उगे थे। वह घोंसले से गिरकर मर गया।”

सन्तरा ने खाट पर चढ़कर घोंसले को देखा। घोंसला खाली था। घोंसले से गिरकर मर गए बच्चे के चिड़ा-चिड़ी माता-पिता अभी भी घर में ही थे। वे तेज़ आवाज़ में चीं-चीं कर रहे थे। बेचैनी से इधर-उधर उड़ते थे। कभी फर्श पर पैदल चलते थे।

खाली घोंसला अब कूड़े से अधिक कुछ नहीं है। सन्तरा ने घोंसले को उठाया और बाहर फेंक आई।

झाड़ू लगाते वक्त सन्तरा को एक कोने में दुबका चिड़िया का बच्चा दिखाई दिया।

वह नन्हा-सा था। पर उसके पंख उग चुके थे। वह चुप था। थोड़ी-थोड़ी देर में चीं-चीं बोलता था। चिड़ा-चिड़ी की चीं-चीं के जवाब में चीं-चीं बोलता था।

सन्तरा फेंका हुआ घोंसला वापस लाई। उसने घोंसले में बच्चे को बिठाया। लेकिन वह एक पल भी नहीं रुका। हल्की फुदक और फर-फर के सहारे वह निकल भागा। पैदल चलते हुए दूसरे कमरे के अँधेरे कोने में जाकर दुबक गया।

“इस तरह तो यह भूखा-प्यासा मर जाएगा।” मैंने सन्तरा से कहा।

“नहीं मरेगा। इसकी माँ इसकी आवाज़ के सहारे इसे ढूँढ लेगी। अब हमें इसकी चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं।” सन्तरा ने कहा।

हमने बाबा को चिड़िया के बच्चे के जीवित होने की खबर दी। उनके चेहरे पर राहत भरी खुशी फैल गई। यह ऐसी खुशी थी जैसी किसी को अपना खोया हुआ बच्चा मिलने पर होती है।

चिड़िया माँ चोंच में खाना दबाए अपने बच्चे को ढूँढ रही थी। वह उसकी आवाज़

के सहारे उस तक पहुँची। उसकी चोंच को अपनी खाना भरी चोंच से चूमा। लेकिन उसे खाना नहीं दिया। वह खाना भरे मुँह से बोलती हुई उसे अँधेरे कमरे से बाहर ले आई। बाहर आकर फिर उसने नन्हे को चूमा, लेकिन खाना नहीं दिया।

वह फर्श से उड़कर खाट पर बैठी। इस तरह कि नन्हे को दिखती रहे। नन्हे ने फर्श से खाट पर माँ के पास तक उड़ने की कोशिश की लेकिन वह आधी ऊँचाई तक ही उड़ पाया।

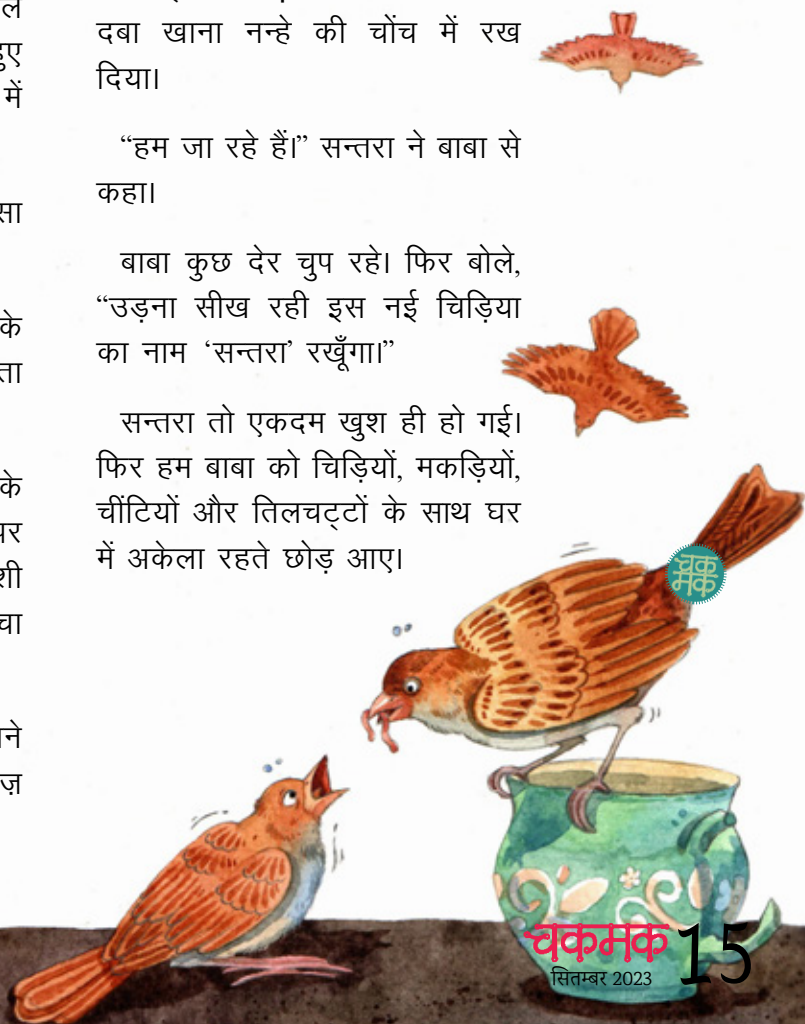
“इसकी माँ इसे उड़ना सिखा रही है। सन्तरा ने बताया।

नन्हे ने दो तीन छोटी-छोटी उड़ानें भरीं। जब वह थककर बैठ गया या बैठ गई तो चिड़िया ने अपनी चोंच में दबा खाना नन्हे की चोंच में रख दिया।

“हम जा रहे हैं।” सन्तरा ने बाबा से कहा।

बाबा कुछ देर चुप रहे। फिर बोले, “उड़ना सीख रही इस नई चिड़िया का नाम ‘सन्तरा’ रखूँगा।”

सन्तरा तो एकदम खुश ही हो गई। फिर हम बाबा को चिड़ियों, मकड़ियों, चींटियों और तिलचट्टों के साथ घर में अकेला रहते छोड़ आए।



बेतवा नदी के किनारे-किनारे खीरखण्ड से ग्योरा

आस्था चौधरी

2 दिसम्बर

रास्ता: लहरठाकुरपुरा-सुकुवां-सुकुमा डुकुमा डैम - बेसनवाड़ा कालन- ग्योरा

दूरी: 20 km

खीरखण्ड पहला गाँव था जहाँ हमने यात्रा की रात गुज़ारी थी। पिछली शाम जब हम इस दुविधा में थे कि आज कहीं रुकने को मिलेगा कि नहीं, खीरखण्ड के लोगों ने हमें इस दुविधा से निकाला। और हमें बुन्देलखण्ड की मेहमान नवाज़ी की पहली झलक देखने को मिली।

अगले दिन थोड़ा उजाला होते ही हमने निकलने का फैसला किया। खीरखण्ड नदी के एकदम किनारे पर बसा है। कैलाश जी के घर से नदी लगभग 300 मीटर की दूरी पर है। वहाँ पहुँचकर हमें नदी की भव्य झलक देखने को मिली। लेकिन वहाँ रास्ता न होने के कारण कैलाश जी ने हमें सुकुमा डैम के लिए दूसरा रास्ता लेने के लिए कहा। यह रास्ता लहर ठाकुरपुरा से एक नहर के किनारे से होते हुए जाता है।

लहर ठाकुरपुरा में हम लोग वहाँ के सरपंच राम भिंड जी और कुछ गाँववालों से मिले। उन लोगों ने बताया कि कैसे बाढ़ आने से इस साल उनकी उड़द और मूँगफली की खेती खराब हो गई। उन लोगों ने यह भी बताया कि कैसे लकड़ी के लिए जंगल कम होते जा रहे हैं। और इससे न सिर्फ हम लोगों के लिए, बल्कि नीलगाय, जंगली सूअर आदि जंगली जानवरों के लिए भी खाने को कुछ नहीं बचा। टिकू कुमार ने बताया कि उन्होंने आईटीआई और बीएससी किया है। पर जॉब न मिलने के कारण उन्हें अपनी डिग्री बेकार लगती है और बेरोज़गार होने की समस्या उन्हें परेशान करती है।

नहर के किनारे-किनारे

आगे हम लोग सुकुवां गाँव से होकर गुज़रे। वहाँ भी नरेश पाल ने टिकू कुमार की तरह ही बेरोज़गारी पे बात की। सुकुवां गाँव से सुकुमा डुकुमा डैम की ओर जाते हुए लगभग 4-5 किलोमीटर लम्बी एक नहर थी। उस नहर को पार करके डैम तक पहुँचा जा सकता था। नहर के दोनों ओर घने पेड़ थे। रास्ता कच्चा और खाली था और कोई भी आते-जाते नहीं दिख रहा था। रास्ते के बीच से मैंने नीलगायें और बहुत-सी गायें देखीं। उन्हें देखकर जानवरों के खेत में आने की समस्या समझ आ रही थी।

आखिरकार हम लोग कुछ घण्टों बाद सुकुमा-डुकुमा डैम पहुँच ही गए। यह हमारी यात्रा का पहला डैम था और नदी के विशाल होने की पहली झलक भी। एक ओर तेज़ रफ्तार में सफेद दूध की तरह नदी का पानी गिर रहा था, वहीं दूसरी ओर नदी आगे बढ़ रही थी। नदी की झलक देखते ही मैं ज़ोर-से चिल्लाई, “वाऊ!” नदी की झलक ने दिन भर चलने की थकान मिटा दी थी। लेकिन मोहित एकदम शान्त खड़े थे। ऐसे जैसे कि नदी में खो-से गए हों। मेरी तुलना में मोहित वैसे भी शान्त स्वभाव के ही हैं। शायद इसलिए

भी उनके हाव-भाव अलग थे। हम लोग पानी में पैर डालकर नदी के आसपास का दृश्य देखने लगे। डैम को पार करने के लिए एक टूटी-सी सड़क थी। उसके ऊपर नदी का अच्छा-खासा पानी बह रहा था। लोग बाइक से उतरकर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर डैम पार कर रहे थे।

पानी जितना खूबसूरत उतना ही डरावना

हम लोगों ने भी थोड़ी देर बाद डैम पार किया। पार करते हुए समझ आया कि दूर बैठकर यह जितना आसान लग रहा था, उतना था नहीं। एक जगह तो सड़क पूरी तरह गायब थी और पानी तेज़ गति से बह रहा था। तब एहसास हुआ कि पानी जितना खूबसूरत होता है, उतना ही डरावना भी। उस समय मुझे प्रकृति की ताकत के आगे इन्सान की कमज़ोरी का एहसास हुआ। खैर मोहित की मदद से मैंने उसे पार कर लिया। नदी पार करते ही हमें एक चाय की दुकान दिखी। हम लोग वहाँ जा पहुँचे।

चाय पीते हुए हम लोग भैया से बात करने लगे। बातों-बातों में उन्होंने बताया कि एक बार ग्योरा गाँव के बॉबी राजा के दादा जी यहाँ से जीप में गुज़र रहे थे। तभी अचानक डैम का गेट खुल गया और तेज़ पानी में उनकी जीप बह गई। उनके दादा जी 4-5 दिनों तक नदी के बीच चट्टानों पर खड़े रहे और अपने बचने की दुआ करने लगे। और वो बच भी गए। उसके बाद उन्होंने आभार व्यक्त करने के लिए शिव मन्दिर बनवाया।

थोड़ी दूर चलने पर बेसनवाड़ा गाँव के लोगों से मुलाकात हुई। 27 वर्षीय संजय यादव जी ने बताया, “बुन्देलखण्ड में न तो कोई फैक्ट्री है, न ही कोई रोज़गार। इसलिए ये भारत के सबसे पिछड़े इलाकों में से एक है।” वहीं 70 वर्षीय दिलीप जी का कहना था, “बुन्देलखण्ड में खेती पहले से बेहतर हुई है। पाइप और मोटर की वजह से सिंचाई में मदद

मिली है। लेकिन जंगल मेरे बचपन की तुलना में बहुत कम हो गया है। आईटी सेक्टर के लोगों ने पूरे बड़े-बड़े जंगल काट दिए।”

आगे बढ़ने पर बुन्देलखण्ड का लैंडस्केप बदलता हुआ दिखा। पत्थरों के टापू, पहाड़ के साथ कड़क धूप में चलते हुए डाकुओं पर बनी हर फिल्म का दृश्य याद आने लगा। मैं कुछ देर के लिए सोच में पड़ गई कि डाकुओं की कहानी में हमेशा ऐसी पथरीली जगहें ही क्यों बताई जाती हैं। क्या ऐसी पथरीली जगहों पर ही लोग डाकू बनते हैं? कष्ट में, पीड़ा में?

ग्योरा गाँव में गुज़री रात

करीबन 4:30 से 5 बजे के बीच हम लोग ग्योरा गाँव पहुँचे। थकान की वजह से हम एक बड़े-से पेड़ के नीचे जाकर बैठ गए। हम दोनों को देख गाँव के कुछ लोग आए और बात करने लगे। उन लोगों ने हमें पानी पिलाया। ग्योरा गाँव में पानी की समस्या थी। इसके बारे में पूछने पर मुनि यादव और उनकी बेटी ज्योति ने बताया कि ग्योरा गाँव में पानी की समस्या 4-5 साल पहले शुरू हुई। मार्च से जून के बीच में टैंकर से पानी लाना पड़ता है। किसी चालू कुँए से पानी लेकर टैंकर के ज़रिए यहाँ लाया जाता है। बाकी महीनों में कोई परेशानी नहीं होती।

बात करते-करते अँधेरा हो चुका था। ठण्ड के मौसम में अँधेरा जल्दी होता भी है। रुकने के लिए पूछने पर गाँव के लोग हमें बॉबी राजा के घर ले गए। वही बॉबी राजा जिनके दादा जी की कहानी हमें चाय वाले भैया ने सुनाई थी। वहाँ पहुँचकर हमने देखा कि उनका घर काफी पुराना और सफ़ेद रंग से पुता हुआ था। गाँव में वह अकेला दो-मंजिला घर था। गाँव के लोग उन्हें आज भी राजा की उपाधि और सम्मान देते हैं।

घर के अन्दर पुराने किले की दीवार, कुआँ (जो अब चालू नहीं है) वगैरह को देखकर उनके पूर्वजों के इतिहास के बारे में पता चल रहा था। उनके घर के लोग पहली मंज़िल पे रहते हैं। पता चला कि वो घर पे नहीं हैं। तो गाँव के लोग हमें उनके भाई पंचम सिंह के घर ले गए। मैंने उनके घर के बाहर बने एक चबूतरे पर बैग रखा और थोड़ी देर के लिए लेट गई। मोहित भी एक जगह बैठ गए। थोड़ी देर में पंचम सिंह बाहर आए। थोड़ी बातचीत के बाद उन्होंने बड़े उत्साह के साथ हमें अपने घर में रुकने के लिए आमंत्रित किया। घर की बैठक में एक बड़ा सोफा और दो दीवान के साथ एक मेज़ रखी थी।

राजा के घर मेहमान नवाज़ी

पंचम सिंह जी ने बताया कि उनके दादा भूमानी सिंह जी को ओरछा के बुन्देला राजा ने नदी के किनारे बसे 12 गाँव दिए थे। इंदिरा गाँधी के समय में उनके दादा जी के पास 1000 एकड़ ज़मीन थी। लेकिन सरकार ने वो ज़मीन ले ली। अब उनके पास 10-12 एकड़ ज़मीन है।

थोड़ी देर के बाद उनके बेटे योगिन्दर जी घर आए और हम लोगों से बातचीत की। कोई शंका न रहे, इसलिए उन्होंने हमारे पहचान पत्र माँगे और उसकी फोटो खींच ली। सरनेम देख उन्हें मेरी जाति का अन्दाज़ तो लग गया था। लेकिन मोहित की जाति के बारे में वो बहुत देर तक बात करते रहे, क्योंकि उन्होंने वह सरनेम पहली बार सुना था। अन्दर जाने पर मैंने आँगन में एक महिला को चूल्हे पे खाना पकाते देखा। वह पंचम सिंह की पत्नी रानी अम्बादेश थीं। माथे पे एक

बड़ी बिन्दी लगाई, साड़ी पहने हुई अम्बा जी की आँखों में एक अलग-सा तेज़ था। फ्रेश होते ही मैं उनके पास बैठकर बातें करने लगी।

मैंने देखा कि वो फिर से खाना बना रही थीं। पूछने पर पता चला कि उन्होंने खिचड़ी बनाई थी। लेकिन वो लोग नहीं चाहते थे कि सुबह के थके हम लोग खिचड़ी खाएँ। इसलिए हमारे लिए आलू की सब्ज़ी और रोटी बना रही हैं। मुझे यह सोचकर बुरा लग रहा था कि हमारी वजह से उन्हें फिर से खाना बनाना पड़ रहा है। अक्सर गाँव में लोग दिन ढलते ही खाना बना लेते हैं और खाकर सो जाते हैं। मैंने सोचा कि कल से हम लोग शाम होने से पहले ही किसी गाँव में शरण ले लेंगे ताकि किसी को ऐसी तकलीफ न हो।

थोड़ी देर उनसे बात करने पे पता चला कि वो क्रिकेट बहुत चाव से देखती हैं। वो कहती हैं कि मैं कभी बाहर नहीं गई। लेकिन टीवी से मैं दुनिया घूमती हूँ। दुनिया की अलग-अलग बीमारियों के बारे में उन्हें पता है। वो टीवी में जापान में हो रहे नए-नए आविष्कारों से लेकर लैपटॉप, नए-नए मोबाइल के मॉडल देखती हैं। देश में क्या चल रहा है, इसके बारे में भी वो हमें खबर देती हैं और कहती हैं तुम लोग चल रहे हो इसलिए तुमने न्यूज़ नहीं देखी होगी।

खाना खाने के बाद उन्होंने मेरा और मोहित का बिस्तर बैठक में तैयार किया। कम्बल के लिए पूछने पर मैंने उन्हें मना किया और मैं अपने स्लीपिंग बैग में घुस गई। बत्ती बन्द थी। दूसरे दिन का सफर खतम हो चुका था और मैं बुन्देलखण्ड के एक राजा के घर में आराम कर रही थी।

अगला चरण: ग्योरा से माताटीला डैम





क्यों-क्यों में इस बार का
हमारा सवाल था—

तुमने अक्सर लोगों को कहते
हुए सुना होगा कि आजकल
भलाई का ज़माना नहीं है।
तुम्हारी राय में क्या वे सही
कह रहे हैं? हाँ तो क्यों और
नहीं तो क्यों नहीं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब
भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़
सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी
हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगले अंक के लिए सवाल है—
तुम्हारे घर का कचरा कहाँ
जाता है? हमारे इलाकों में
कचरा हर जगह दिखता है।
ऐसा क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/
कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।
जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.
in पर ईमेल कर सकते हो या फिर
9753011077 पर व्हॉट्सएप भी कर
सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज
सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज
परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

मेरा दोस्त मुझसे पेंसिल माँगता है और वापिस नहीं करता। साथ ही
कोई मेरे दोस्त इरेज़र लेते हैं तो वो भी वापिस नहीं करते। इसलिए
आजकल भलाई का ज़माना नहीं रहा।

सोनम, पहली, आरम्भ पब्लिक स्कूल, सलोनी, छत्तीसगढ़

एक बार मैं दुकान पर चीनी खरीदने गई। वहाँ बहुत भीड़ थी। मैंने
पैसे देकर चीनी खरीद ली। फिर मैंने और सामान लिया और घर
आ गई। घर पर देखा कि झोले में चीनी नहीं थी। मैं घबरा गई। मैं
दौड़ते हुए वापिस दुकान पर गई। दुकानदार ने मुझे देखकर कहा
कि बेटा, तुम्हारी चीनी यहीं छूट गई थी। वापिस ले लो। मुझे बहुत
खुशी हुई। और मैंने सोचा कि भलाई का ज़माना अभी भी है।

केतकी सोनकर, सातवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हाँ, आजकल भलाई का ज़माना नहीं है। क्योंकि जब लोग किसी
का भला करना चाहते हैं तो उनके साथ ही बुरा हो जाता है। जैसे
जब कोई किसी को उसकी सच्चाई बताता है या उसे बोलता है कि
यह कार्य ऐसे न करके दूसरे तरीके से करो तो यह सरल होगा।
तो वह उससे ही कहते हैं कि तुम मुझे मत बताओ, मुझे आता है
और उस पर गुस्सा करने लगते हैं। और कभी-कभी जब लोगों के
पैसे सड़क पर गिर जाते हैं और कोई व्यक्ति उनकी मदद के लिए
पैसे उठाता है तो कुछ लोग उसे ही चोर बोलकर उसके साथ बुरा
व्यवहार करने लगते हैं।

तनु, बारहवीं, आर. जी. एन. वी, खटीमा, उत्तराखण्ड

भलाई का ज़माना बरसात में रास्तों की तरह टूट गया है। आजकल
आम रास्ते टूट जाते हैं। लेकिन स्कूल जाने के लिए खेतों से या
किसी के घर के आँगन से आओ तो वे लोग गालियाँ बकते हैं।

किशन, नौवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

आजकल किसी का भला इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि अगला
व्यक्ति यही समझता है कि इसमें इसका कोई लालच है तभी यह
हमारा भला कर रहा है।

सादिया हुसैन अखून, पाँचवीं, नर्मदा वैली इंटरनेशनल स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

जब मैं साइकिल से गिर गया था तो मेरे दोस्त ने मेरी मदद की थी। जब वो स्कूल में लंच नहीं लाया था तो मैंने उसको अपना लंच दे दिया था। कुछ लोग अभी भी एक-दूसरे के बारे में सोचते हैं। पूरी दुनिया बदल चुकी है। केवल कुछ लोग एक-दूसरे पर भरोसा रखते हैं।

गोविंद, आठ साल, मंजिल संस्था, दिल्ली

भलाई करने से दिल को सुकून मिलता है। लोग स्वार्थी हो रहे हैं, एक-दूसरे की टाँग खींचने में लगे हैं। पर भलाई करने में भी कमी नहीं कर रहे हैं। कोरोना में लोगों ने कितनी भलाई की है।

पल्लवी, सातवीं, जिला परिषद उच्च प्राथमिक शाला, लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

हाँ, भलाई का ज़माना नहीं है। एक दिन मैं मम्मी-पापा के साथ बाज़ार जा रहा था तो एक लड़की स्कूटी से खुद गिर गई। और उसके पीछे जो लड़का आ रहा था उस लड़के ने उसे उठाया तो लड़की ने लड़के को बोला, “अच्छे-से चला अँधे।”

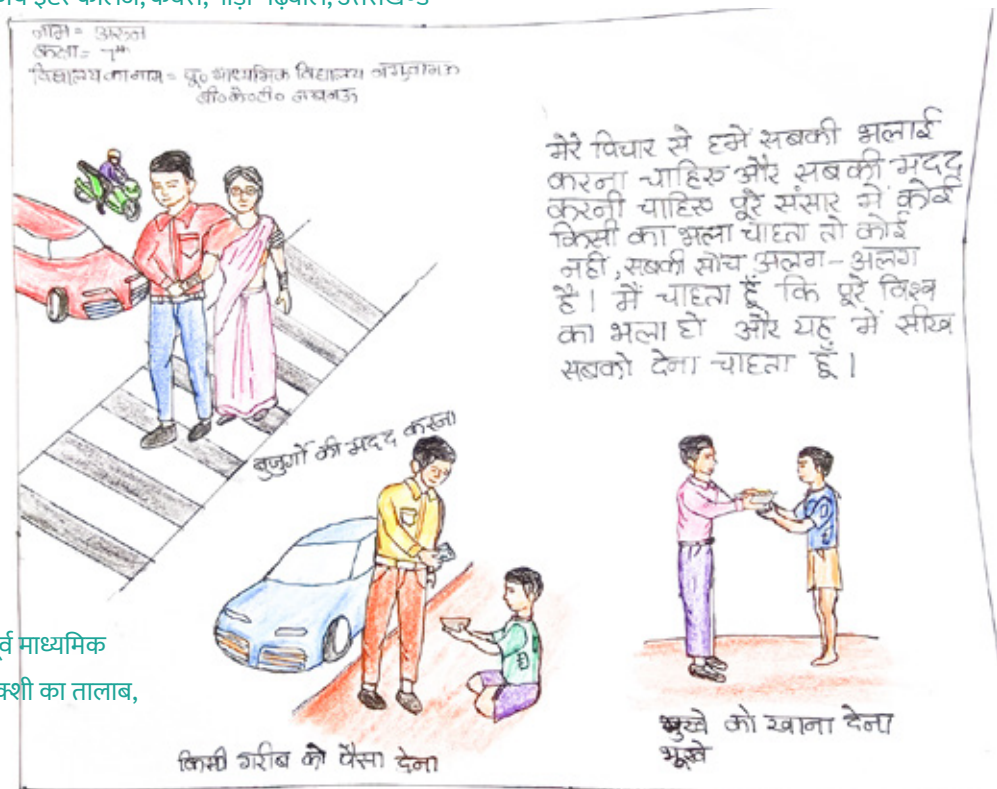
प्रिंस कुंडल, आठवीं, शासकीय माध्यमिक हाई स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि हम सब लोगों ने ऐसी घटनाओं के बारे में सुना है जिनमें कुछ ठग लोग मदद करने के बहाने से लोगों को लूट लेते हैं। पर इसका मतलब यह नहीं है कि सारे लोग बुरे होते हैं। हमें अपनी सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए। हमें लोगों की परख होना चाहिए।

सृष्टि मटकर, बारहवीं, देवास, मध्य प्रदेश

भलाई कहाँ रह गई हैं? किसी के रुपए गिर जाते हैं। किसी के घर में चोरी हो जाती है। यहाँ तक कि लोग मुर्गो-बकरियों की चोरी भी करते हैं। लोग बुरे लोगों का नाम भी नहीं लेना चाहते। चुप रहते हैं।

पीयूष कुमार, नवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड



चित्र: अरुण, सातवीं, पूर्व माध्यमिक विद्यालय नगुवामऊ, बकशी का तालाब, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मुझे नहीं लगता कि भलाई का ज़माना रहा है। एक बार मैं अपनी मम्मी के साथ कहीं जा रही थी। तभी मैंने देखा कि एक अंकल सड़क पर गिरे हुए थे। उन्हें बहुत सारी चोटें आई थीं। लेकिन कोई उनकी मदद नहीं कर रहा था। सब बस उनकी फोटो ले रहे थे।

श्रावणी बावस्कर, सातवीं, किंडर हायर सैकेंडरी स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मेरे पड़ोस की दादी ने एक लड़के को 100 दिए धारे से पानी लाने के लिए। वह गागर भी ले गया और पानी भी नहीं लाया। ऐसे कई हैं जिन्होंने बुरे वक्त में रुपयों की मदद की। उधारी भी नहीं लौटाते हैं और सम्बन्ध भी तोड़ देते हैं। भलाई का ज़माना नहीं रहा।

सलोनी नेगी, नौवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

आजकल भलाई का ज़माना नहीं है। क्योंकि यदि मुसीबत में लोगों की मदद करो तो जब अपने पर मुसीबत आती है तो लोग अपने आप से मतलब रखकर चलते बनेंगे। इससे साबित होता है कि भलाई का ज़माना नहीं है।

वैष्णवी कुमारी, छठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

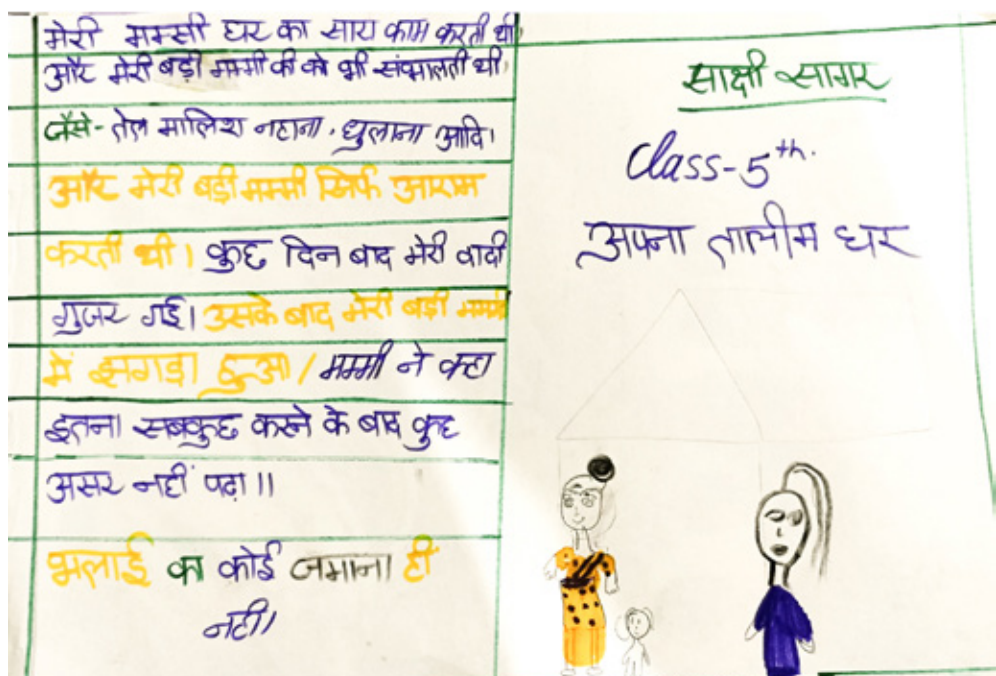
आजकल भलाई का ज़माना नहीं है। क्योंकि भलाई करने वाले व्यक्ति से कुछ लोग और ज्यादा अपेक्षा रखते हैं। और कार्य सिद्ध न होने पर उस पर नकारात्मक टिप्पणियाँ करते हैं या कुछ और तरीके से नीचा दिखाते हैं। जैसे कि यदि कोई शराबी आदमी को सड़क से उठाकर उसके घर पहुँचा दे तो उसके घर वालों का यह कहना निंदनीय है कि उनकी एक चप्पल कहाँ छोड़ आए। जबकि शराबी खुद अपनी चप्पल छोड़कर आया होता है। इसी तरह समाज के नेक व्यक्ति को आजकल अच्छे कामों के लिए निंदा का पात्र बनना पड़ता है जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है।

मानसी नैलवाल, सातवीं, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वज़ीराबाद, दिल्ली

आजकल भलाई का ज़माना नहीं है। क्योंकि हम किसी का कितना भी अच्छा कर लें, वह बोल ही देता है कि तूने किया ही क्या है मेरे लिए।

अमित कुमार, सत्रह साल, लर्निंग बाए लोकल्स, दिल्ली

चित्र: साक्षी सागर,
पाँचवीं, अपना तालीम घर,
फैजाबाद, उत्तर प्रदेश



भलाई का कोई ज़माना ही नहीं है।
मेरे ज़माने में जब को काफी जो ज़माना
पड़ती है, तो मैं दोस्तों को काफी दे देती हूँ।
लेकिन मेरे ज़माने पड़ने पर मेरे दोस्तों को काफी
नहीं देते हैं और कोई बहाना बना देते हैं।

जब मेरे दोस्तों के घर पर मेहमान आते हैं,
तो वो एक को दफ़ता या मटिमा नहीं आते हैं,
और जब मेरे घर पर मेहमान आते हैं,
तो मैं एक या दो दिन खेचने नहीं आती हूँ।
तो वो मुझ से नाराज़ हो जाते हैं,
और साथ में गाने गाती हूँ।
जब मेरे दोस्तों खेचने नहीं आते तो हम ज़ुल्ल नहीं करते,
और उनसे बातें भी करते हैं। भलाई का ज़माना नहीं है।



चित्र: रौशनी, पाँचवीं, अपना तालिम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

आजकल भलाई का ज़माना नहीं है कहने से ऐसा लगता है कि जैसे पहले भलाई का ज़माना था, अब नहीं है। पहले भी बुराई रही है और अभी भी भलाई मौजूद है। कुछ घटनाओं की वजह से हम पूरे ज़माने को दोषी नहीं कह सकते। भलाई और बुराई साथ-साथ रहते हैं। भलाई की बातें होती ही तभी हैं, जब बुराई होती है।

आदर्श नियोलिया, दसवीं, आर्यमन विक्रम
बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ़ लर्निंग, हल्द्वानी,
उत्तराखण्ड

क्या वाकई भलाई का ज़माना नहीं रहा?

यह काफी सुनने में आता है कि अब लोग पहले जैसे भले नहीं रहे, ज़माना खराब हो गया है, लोग विश्वास के काबिल नहीं रहे वगैरह-वगैरह। तो क्या वाकई ये बातें सच हैं? अपने अध्ययन में एक मनोविज्ञानी ने इसी सवाल के जवाब की तलाश की है।

पहले तो उन्होंने 1949-2019 के बीच अमेरिका में नैतिक मूल्यों पर किए गए सर्वेक्षण खँगाले। उन्होंने पाया कि 84 प्रतिशत सवालों के जवाब में अधिकतर लोगों ने कहा कि नैतिकता का पतन हुआ है। 59 अन्य देशों में किए गए अन्य सर्वेक्षणों में भी कुछ ऐसे ही नतीजे देखने को मिले।

इसके बाद उन्होंने अमेरिका के उन्हीं प्रतिभागियों के साथ 2020 में स्वयं कई अध्ययन किए। अध्ययन में विभिन्न राजनीतिक विचारों, नस्ल, लिंग, उम्र और शैक्षणिक योग्यता के लोग शामिल थे। इसमें भी लोगों ने कहा कि उनके बचपन के समय की तुलना में लोग अब कम दयालु, ईमानदार और भले रह गए हैं।

भला लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि ज़माना खराब हो रहा है? शोधकर्ताओं का अनुमान है कि इसका ताल्लुक चुनिंदा स्मृति जैसे कारकों से है; अक्सर अच्छी यादों की तुलना में बुरी यादें जल्दी धुँधला जाती हैं। और इसलिए आम तौर पर ऐसा लगता है कि बीता हुआ समय ज़्यादा अच्छा था।

शोधकर्ताओं का कहना है कि नैतिक पतन की भ्रामक धारणा के व्यापक सामाजिक और राजनीतिक अंजाम हो सकते हैं। उदाहरण के लिए 2015 के एक सर्वेक्षण में अमेरिका के 76 प्रतिशत लोगों ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता देश को नैतिक पतन की ओर जाने से बचाने की होनी चाहिए।

बड़ी चुनौती लोगों को यह स्वीकार कराने की है कि यह भ्रम है जो सर्वव्याप्त है। (स्रोत फीचर्स से साभार)



चित्रों के
ज़रिए गुणा
भाग - 1

आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री

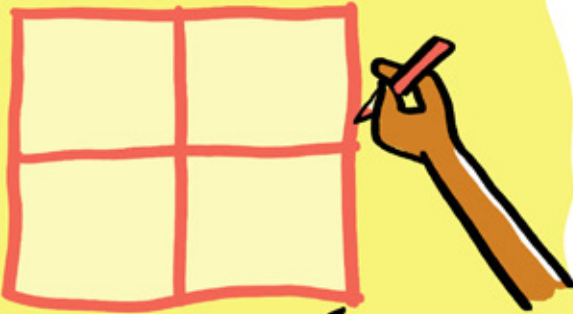
गणित के
मज़ेदार



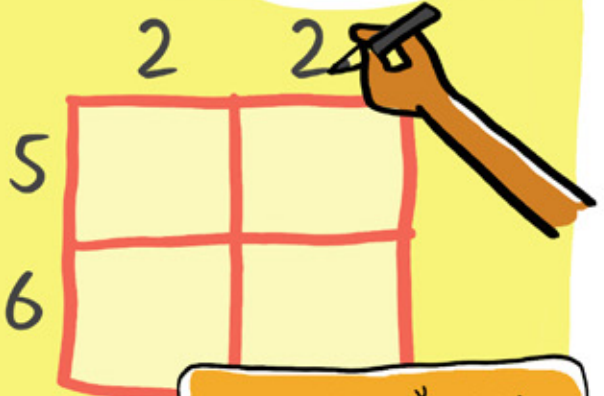
मुझे संख्याओं को गुणा करने का
एक दिलचस्प तरीका मिला है।



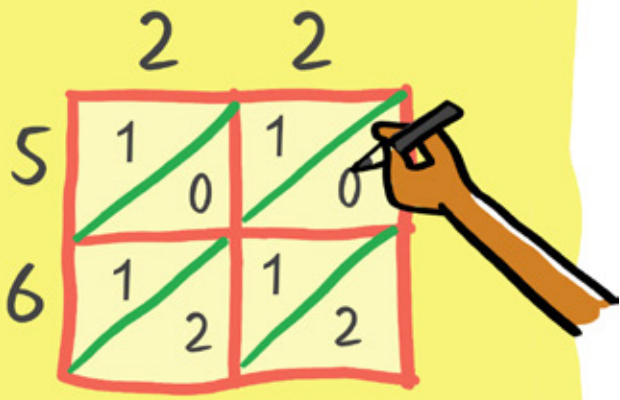
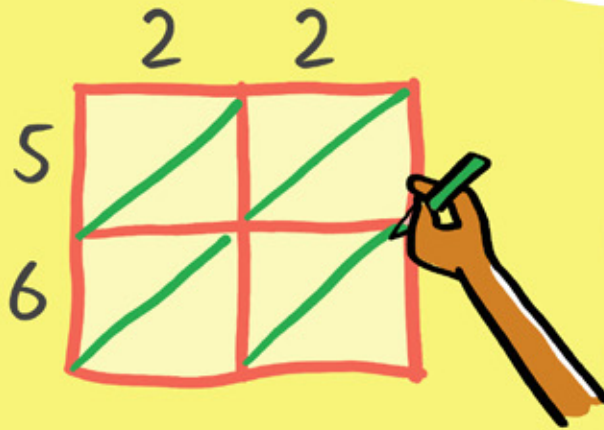
अच्छा!



हाँ, मैं करके दिखाती हूँ।
तू कोई दो संख्याएँ बता।



हम्म... 56 और 22!



ये कौन-सी संख्याएँ हैं?

पहाड़े में इन संख्याओं को
ढूँढने की कोशिश कर।



	2	2
5	1	1
	0	0
6	1	1
	2	2

समझ गया!

$5 \times 2 = 10$ होता है, इसलिए तूने
1 और 0 को इन खानों में लिखा है।
और $6 \times 2 = 12$ होता है, इसलिए इन
दो खानों में 1 और 2 लिखा है।



बिल्कुल ठीक। अब हम संख्याओं को
जोड़ेंगे। क्या तू इन हिस्सों को देख पा
रहा है जिन्हें मैंने हरे रंग की लाइनों का
उपयोग करके बनाया है?



	2	2
5	1	1
	0	0
6	1	1
	2	2

हाँ पहले और चौथे भाग में केवल 1-1
संख्या है। जबकि दूसरे और तीसरे
भाग में 3-3 संख्याएँ हैं।



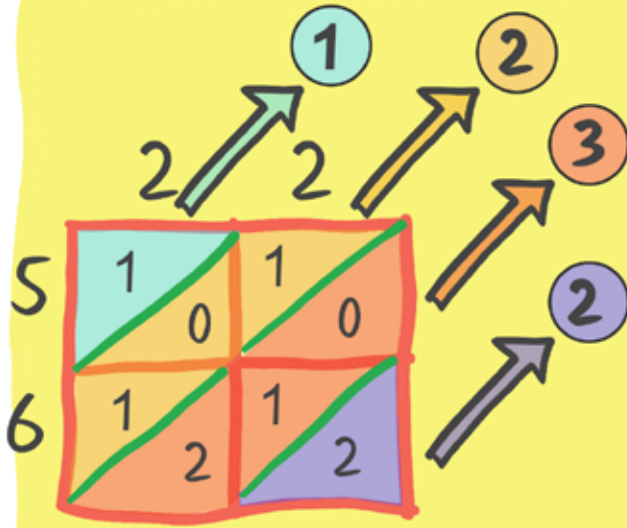
अब इनमें से हरेक भाग की
संख्याओं को जोड़ते हैं।



	2	2
5	1	1
	0	0

ओके। यानी कि हमें उन संख्याओं को
आपस में जोड़ना है जो दो लगातार
हरी लाइनों के बीच में लिखी हैं।





इन्हें एक संख्या के रूप में देखा
यह है 1232।

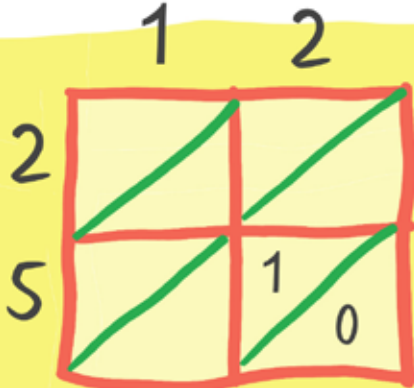
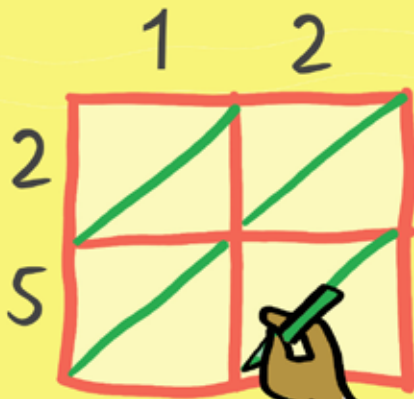
जोड़ने पर मिलेगा 1, 2,
3 और 2। अब?

अब 56 और 22 को
गुणा करके देखा।

$$\begin{array}{r} 56 \\ \times 22 \\ \hline 112 \\ 112 \\ \hline 1232 \end{array}$$

1232! अरे वाह!
यह तो बढ़िया है।

एक गुणा में भी
करके देखूँ?
 $25 \times 12!$



2×5 होता है 10, तो इसके सामने के
खानों में 1 और 0 लिख देता हूँ। लेकिन
 2×2 तो 4 होता है, अब क्या करें?

अरे! परेशान मत हो।



	1	2
2		0
5		1

4 को 04 लिख दे।
ऐसे...



ओके। तो, 1×5 हो जाएगा
05 और 1×2 हो जाएगा 02

एकदम सही।



	1	2
2	0	0
5	0	1

ये तो हो गया।
अब संख्याओं को जोड़ता हूँ।



जोड़ने पर 0, 2, 10 और 0 मिला। तो
जवाब हुआ 02100 यानी कि 2100, लेकिन
 25×12 तो 2100 नहीं होता!

बिल्कुल ठीक। यह गलत जवाब है।
जब भी संख्याओं का योगफल 10 के
बराबर या उससे ज्यादा हो तो 1 को
अगली संख्या में जोड़ना होगा।



यह तो मेरे दिमाग
के ऊपर से गया!



$$\begin{array}{cccc}
 0 & 2 & 10 & 0 \\
 & +1 & & \\
 0 & 2 & 0 & 0 \\
 & & & \\
 0 & 3 & 0 & 0 \\
 & & & \\
 & & & 300
 \end{array}$$

मैं समझाती हूँ। यह देख।
तो तुझे जो 0, 2, 10, 0
मिला था, उसका मतलब है
कि सही जवाब 300 है।

अच्छा। पर मैं थोड़ा
कन्फ्यूज हो रहा हूँ।

अगर योगफल 20 या 30
या इससे ज्यादा हुआ तो
क्या करेंगे?

तू
बता...

2 या 3 या जो भी संख्या होगी
उसे अगली संख्या में जोड़ेंगे?

हाँ, बिल्कुल।

यह काफी मजेदार है। पर यह तरीका
काम क्यों करता है और क्या ये दो से
ज्यादा अंकों वाली संख्याओं के
लिए भी काम करेगा?

तू खुद ही सोच कि ये कैसे काम करता
होगा। और ये भी सोच कि दो से ज्यादा
अंकों वाली संख्याओं के लिए इसे कैसे
इस्तेमाल करेंगे। फिर अगली बार इसके
बारे में बात करेंगे।

तुम भी इस तरीके से
गुणा करके देखो और हमें
लिखना कि इस तरीके के
काम करने का क्या
कारण हो सकता है।

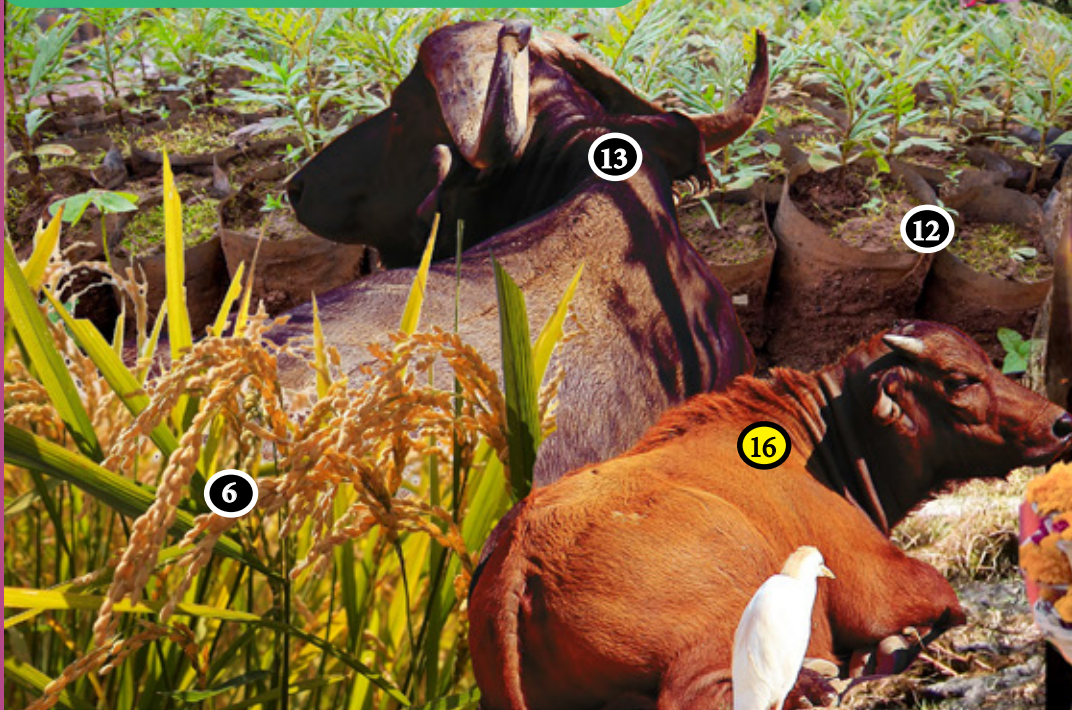
मैं

2	1	7	6		8	4		
				4				8
4		3					6	9
5	6		7			8		1
			8		4		2	
3		8	9	5	1	6	7	4
	4	9		2		5	8	
	5	6			9	1		2
				8		9		

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो।

सुडोकू 69

पहेली चित्र





	1			2		3		4
				5				
6			7			8	9	
		10			11			
12				13		14		
		15						16
17	18			19		20		
			21					
22					23			

ऊपर से नीचे

बाएँ से दाएँ

व्यक्ति पर बहस या विषय पर?

अमन मदान

कई बार हम मुद्दे या विचार को छोड़ दूसरी बातों में उलझ जाते हैं। हमारा निशाना व्यक्ति बन जाता है और मूल मुद्दा या विचार कहीं पीछे छूट जाता है। विचार या मुद्दे को ध्यान में रखने से रिश्ता भी बना रहता है और हम सार्थक रूप से चर्चा भी कर पाते हैं।

ज़ाहिदा और पुनीत पक्के दोस्त थे। वे सब काम साथ में करते। सवालों के जवाब साथ में ढूँढते, लंच ब्रेक में खाना साथ खाते और क्रिकेट भी एक ही टीम में रहकर खेलते थे। यहाँ तक कि जब टीचर से डाँट पड़ती, तो वो भी उन्हें साथ में ही पड़ती थी।

एक दिन पुनीत ज़ाहिदा से नाराज़ हो गया। हुआ यूँ कि कुछ दोस्त साथ बैठे हुए थे। और बात चल रही थी कि क्रिकेट का सबसे अच्छा खिलाड़ी कौन है। कुछ बच्चों ने जोर-से कहा, “रोहित शर्मा ही सबसे अच्छा है!” और दूसरे बच्चे बोले, “विराट कोहली जैसा कोई नहीं!”

पुनीत बोला, “मैं तो कोहली को पसन्द करता हूँ।”

ज़ाहिदा उस पर हँसने लगी और बोली, “अरे! वो तो बिलकुल बेकार है। बूढ़ा हो गया है।”

“नहीं, नहीं, वह इतने सालों से हमारी टीम में रहा है। और उसने कई बार हारते हुए मैच को जिताया है!” पुनीत बोला।

“तो क्या, उसके तो बाल भी सफेद हो गए हैं,” ज़ाहिदा बोली, “और तो और उसकी तो दाढ़ी भी सफेद है।” यह सुनकर कई बच्चे हँसने लगे। “वो तो बकरी जैसा लगता है, मेस्स..., मेस्स..., मेस्स...”

पुनीत को बहुत बुरा लगा। “मुझे रोहित शर्मा से कोई शिकायत नहीं है, मगर कोहली के बारे में ऐसे नहीं बोलना चाहिए।” कहकर वह वहाँ से चला गया। पूरा दिन फिर उसने ज़ाहिदा से बात नहीं की।

“तुम मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे, पुनीत?” ज़ाहिदा ने उसके पास आकर कहा। मगर पुनीत बस दूसरी तरफ देखता रहा। ज़ाहिदा को बहुत बुरा लगा और वह वहाँ से चली गई।

शाम को घर आकर ज़ाहिदा ने अपनी अम्मी को सारी बात बताई। बताते-बताते उसका मुँह रुआँसा हो गया।



चित्र: नितिन, दूसरी, अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी

अम्मी ने कहा, “तुम लोगों को कोहली की निजी बातों में नहीं पड़ना चाहिए था। तुम्हें उनसे क्या मतलब? वह क्रिकेट कैसा खेलता है, उस पर ध्यान देना चाहिए। नहीं? कोई अच्छा बैट्समैन है कि नहीं, ये कैसे तय करते हैं?”

ज़ाहिदा बोली, “अच्छा बैट्समैन वो है जो ज़्यादा रन बनाए। और जब टीम मुसीबत में हो तो बिना घबराए खेले, लगातार अच्छा खेले।”

अम्मी बोली, “बिलकुल सही। किसी की दाढ़ी है या नहीं, सफेद बाल हैं या नहीं — इससे उसके महान खिलाड़ी होने पर क्या फर्क पड़ता है?”

ज़ाहिदा दबी हुई आवाज़ में बोली, “कोई फर्क नहीं पड़ता।”

“अगर ऐसे निजी बातों पर टिप्पणी करोगे, तो कोई भी नाराज़ हो जाएगा। मुझे लगता है कि पुनीत इसीलिए नाराज़ हुआ है।”

“हाँ, मुझे भी यही लगता है,” ज़ाहिदा बोली।

अम्मी बोली, “मुझे नहीं पता दोनों में से कौन ज़्यादा अच्छा है — रोहित या विराट, या दोनों बराबर अच्छे हैं। लेकिन यह ज़रूर पता है कि अगर हम उनके खेल की तुलना कर रहे हैं, तो उनके खेल से ही यह तय करना चाहिए, उनकी व्यक्तिगत बातों या निजी ज़िन्दगी से नहीं।”

अगले दिन ज़ाहिदा पुनीत के पास गई। “विराट कोहली ने अपने कैरियर में कितने रन बनाए हैं?” उसने पूछा। पुनीत ने सोचा था कि वो ज़ाहिदा से बात नहीं करेगा। मगर वो कोहली का दीवाना था। इसलिए उससे रहा नहीं गया। दूसरी तरफ देखते हुए उसने जवाब दिया, “बहुत सारे, हज़ारों-हज़ारों रन बनाए होंगे। मुझे पता नहीं कितने।”

फिर ज़ाहिदा की तरफ देखते हुए उसने पूछा, “रोहित शर्मा ने कितने रन बनाए हैं?”

ज़ाहिदा बोली, “मुझे भी नहीं पता। उसने भी हज़ारों-हज़ार बनाए होंगे। तो फिर कैसे तय करें कि कौन अच्छा खिलाड़ी है?”

“ऐसा करते हैं कि इंटरनेट पर उनके खेल का रिकॉर्ड देखते हैं,” पुनीत बोला।

“हाँ, मगर उनके कपड़ों और बालों से हमें कोई मतलब नहीं। ठीक है?” ज़ाहिदा ने कहा।

“बिलकुल। हमें उनके खेल को देखना है। उनकी व्यक्तिगत बातों को उठाने से तो बात सिर्फ़ इधर-उधर हो जाती है। कौन ज़्यादा अच्छा खेलता है, यह थोड़ी ना तय होता है,” पुनीत बोला।

और दोनों मुस्कराते हुए लाइब्रेरी की ओर जाने लगे।



चित्र: शौर्य, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी

जब मैं छह-सात साल की थी तब मेरी
मम्मी मेरी चोटी गुँथती थीं।

मेरे लम्बे-लम्बे बाल

ला ला....
ला ला..।

मूल टेक्सट: दीक्षिता ठाकुर

छठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: अस्मिता कोरपेनवा

लम्बी मेरी गुथ...

मैंने खुद चोटी बनाने की कोशिश की।
ओह...

आ...ई....

बस
पोनीटेल ही
बन पाई....

तू खुद ही चोटी बनाना सीख क्यूँ नहीं लेती।

मम्मी, यार बना दो ना चोटी। जब देखो तब खाना बनाती रहती हो।

मुझे बनाना आता तो मैं खुद ही बना लेती।



आ...ई....
दुखता है मम्मी।

लॉकडाउन में मैंने खुद चोटी बनाने की कोशिश की।

कुछ और
कोशिश की...

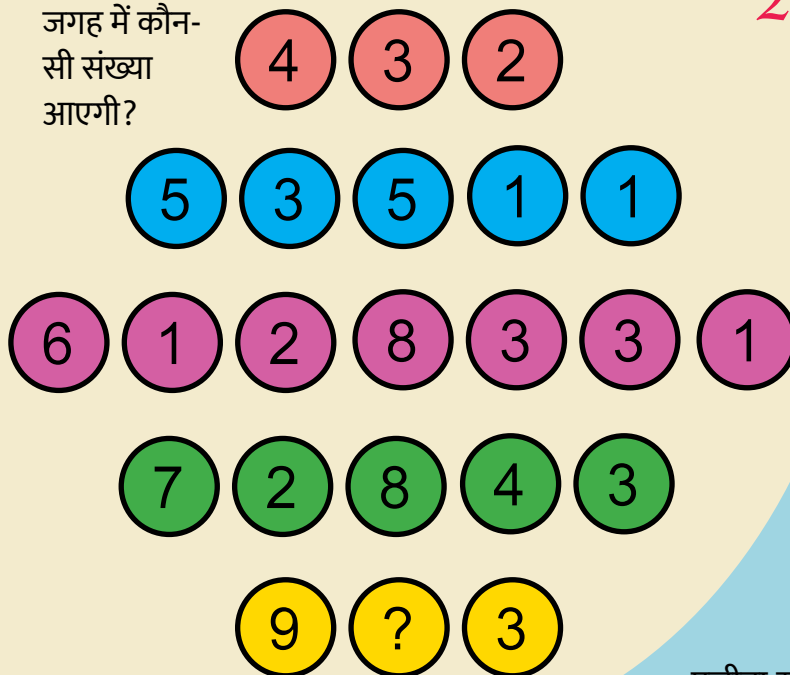
...और, और
कोशिश की

और फिर

मैं चोटी बनाना सीख गई।



1. प्रश्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?



2. $1 () \times () = 7 ()$

सभी खाली जगहों में एक ही संख्या आएगी, कौन-सी?



3. एलीना सोमवार से शुक्रवार तक रोज सुबह रस्सी कूदती है। हर दिन वो पिछले दिन से 10 बार ज़्यादा रस्सी कूदती है। अगर गुरुवार को उसने 50 बार रस्सी कूदी हो तो बताओ कि सोमवार से शुक्रवार तक उसने कुल कितनी बार रस्सी कूदी?

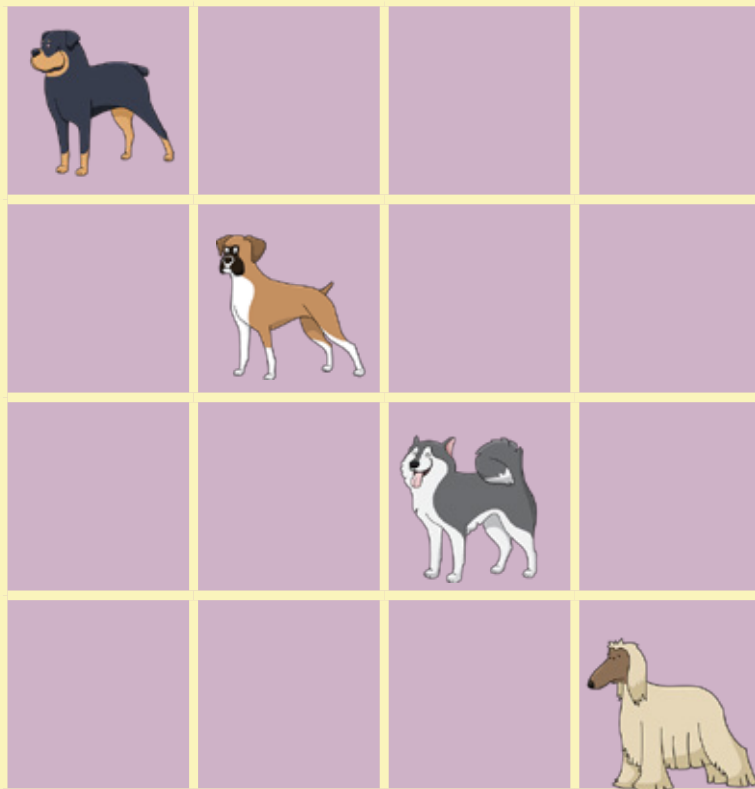
5. तीन डॉक्टर्स का कहना है कि रॉनी उनका भाई है। पर रॉनी का कहना है कि उसका कोई भाई नहीं है। क्या रॉनी झूठ बोल रहा है?

6. एक ऊँट का मुँह उत्तर में है, दूसरे का दक्षिण में। क्या वे दोनों एक ही बर्तन में एक साथ खाना खा सकते हैं?

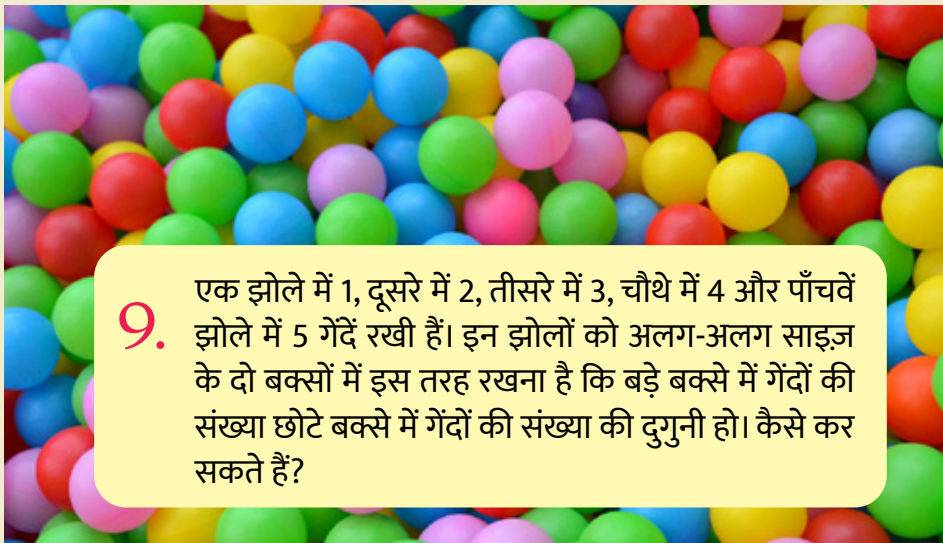
4. दी गई ग्रिड में कई कीड़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

लु	ति	झीं	सा	ना	इ	ल्ली	ब	चीं
ग	त	दी	गु	ब	रैं	ला	र	टी
नू	ली	म	छ	र	सि	बी	बू	टि
आ	म	क	डी	दी	र	बि	टा	डु
म	धु	घु	न	ब	सा	छू	कि	पा
रे	म	जों	हू	ख	ट	म	ल	जा
प	क्खी	टी	क	सि	जू	भाँ	नी	या
तं	ति	ल	च	ट्टा	दा	रा	तैं	ग
गा	ल	घों	घा	डा	ल	त	म	नू

7. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग कुत्ते की तस्वीर आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी तस्वीरें आएंगी?



8. तुम्हें 1, 9, 9 और 6 के साथ जोड़, घटाव, गुणा या भाग करके 63 उत्तर लाना है। कैसे करोगे?



9. एक झोले में 1, दूसरे में 2, तीसरे में 3, चौथे में 4 और पाँचवें झोले में 5 गेंदें रखी हैं। इन झोलों को अलग-अलग साइज के दो बक्सों में इस तरह रखना है कि बड़े बक्से में गेंदों की संख्या छोटे बक्से में गेंदों की संख्या की दुगुनी हो। कैसे कर सकते हैं?

माथा पट्टी

फटाफट बताओ

आपस की उलझन
सुलझाकर
अलग-अलग वह बाँटती
दाँत हैं उसके मगर
फिर भी नहीं है काटती
(फिक)

कौन-सा शब्द है जिसे
गलत कहो तो भी सही
ही होता है?

(फालग)

पैदा होऊँ तो हरी-हरी मैं
बड़ी होऊँ तो लाल
पेट में रखती मोती माला
देखो मेरा कमाल

(गिम्नी)

उलटा करके रंग भरूँ,
सीधे में मैं फल हूँ

(कृति)

मैं भाग नहीं सकती
फिर भी लोग मुझे बाँधते
हैं। बताओ मैं कौन हूँ?

(झिउ)

जवाब पेज 42 पर

मेरे पापा

संजीवनी साहू
सातवीं
कम्पोजिट स्कूल, धुसाह
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पिताजी पहले समोसे की दुकान करते थे। पर उसमें कुछ ज्यादा कमाई नहीं होती थी। पापा ऐसे ही कुछ-कुछ काम करते गए। तब उनकी उम्र 15-16 साल थी। फिर उन्होंने सोचा कि फलों का ठेला लगा लें। शुरुआत में बिक्री कम थी पर धीरे-धीरे पापा के ठेले की कमाई बढ़ गई। उन्होंने हर तरह के फल रखने शुरू किए और अच्छी कमाई होने लगी। अब पापा एक या दो लोगों को ठेले पर रखना चाहते थे। क्योंकि उनकी उम्र 45 साल हो गई है। काम करने वाला कोई नहीं मिला। इसलिए पापा ठेले पर फल लादकर स्वयं ही जाते हैं। हम लोग चार बहनें हैं और अभी पढ़ रहे हैं। मैं पढ़-लिखकर अपने पापा की मदद करना चाहती हूँ।



चित्र: प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मधुमक्खी का छत्ता

ज्योति मदनी
मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक बार हम सब लोग कैरी तोड़ने गए थे। पेड़ पर मधुमक्खी का छत्ता था। हमने पत्थर मारा तो मधुमक्खी फैल गई। हम सबको काटा! गणेश तो कीचड़ में गिर गया था।



चित्र: प्रांजल, दूसरी, अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी

भेदभाव !

मुस्कान ठाकुर
पाँचवीं
देवास, मध्य प्रदेश

जब मेरी मम्मी की नई-नई शादी हुई थी। तब सब ठीक चल रहा था। पहले के ज़माने में पहले आदमी खाना खाते थे। औरतें उन्हें खाना खिलाती थीं और उसके बाद वो खाना खाती थीं। यह बात मम्मी को अच्छी नहीं लगती थी।

जब मेरे चाचा की शादी हुई तो हमारे दादा जी ने भेदभाव करना शुरू कर दिया। उसके बाद कई साल बीत गए और हमारी मम्मी शहर आ गई। तब तक हम पाँच बहनें हो चुकी थीं। वहाँ गाँव में भी मेरे चाचा के दो लड़के और एक लड़की हो चुकी थी। हमारी मम्मी को एक भी लड़का नहीं हुआ। इसलिए मम्मी और चाची में भेदभाव होता था, जो कि नहीं होना चाहिए था।

मेरी मम्मी ने मुझे यह सब बातें बताईं। सही नहीं हुआ ये। मुझे तो बहुत बुरा लगा ये जानकर। पर मैं कुछ नहीं कर सकती हूँ।

Panna



धरती फटी

शौर्य पाठक
दूसरी
डिवाइन पब्लिक
स्कूल, बलरामपुर
उत्तर प्रदेश

एक जंगल था। उसमें कई प्रकार के जानवर रहते थे। उस जंगल में एक नदी थी। वहीं पे सारे जानवर पानी पीने जाते थे। एक दिन लोमड़ी पानी पीने गई तो उसने देखा कि नदी के पास धरती फटी थी। वह डर गई और भागते-भागते पूरे जंगल में खबर फैला दी। सारे जानवर वहाँ पहुँच गए। सारे जानवर उस पार जाने की तरकीब सोचने लगे। तभी लोमड़ी को एक तरकीब सूझी। उसने कहा कि हम सब पुल बनाएँगे पेड़ों के तनों और डालियों का। घोड़े ने पेड़ को नीचे गिराया। बाघ और तेन्दुए ने अपने नाखूनों से काट-काटकर उन्हें अलग किया। ऐसे ही वे लोग कुछ पेड़ों को काटते-गिराते गए। जहाँ धरती फटी थी वहाँ बन्दर ने लकड़ी लगाई। और छोटी-छोटी लकड़ियों को रखा। चील ने दोनों ओर लकड़ियाँ लगाई और बन्दर ने दोनों लकड़ियों को पेड़ों की टहनियों से बाँधा। फिर उसके ऊपर पुल बन गया। फिर सारे जानवर पुल पर से पानी पीने लगे।



चित्र: नाएशा कक्कड़, छठवीं, जेम्स मॉर्डन एकेडमी, दुबई



पुस्तक

चित्र: अर्पिता कुमारी, छठवीं, बैम्बूसा लाइब्रेरी, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश

जश, चौथी, डीपीएस अहमदाबाद, गुजरात

मेरी पास हैं रंग-बिरंगी पुस्तक
जो कहती बातें नई-पुरानी
मुझे हमेशा कुछ नया सिखातीं
जैसे मेरे नाना-नानी

दुनिया की हर बात बताती
कभी हँसाती कभी रुलाती
में करता हूँ उससे प्यार
में हूँ उसका राज दुलार

मैं पढ़ता उसे रात में
लेकर घूमता साथ में
पढ़ता एक ही साँस में
बातें करता उससे दिन में और रात में





बिजली चली जाए तो

सारिका
ग्यारहवीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, बल्ह, हिमाचल प्रदेश

तैरना

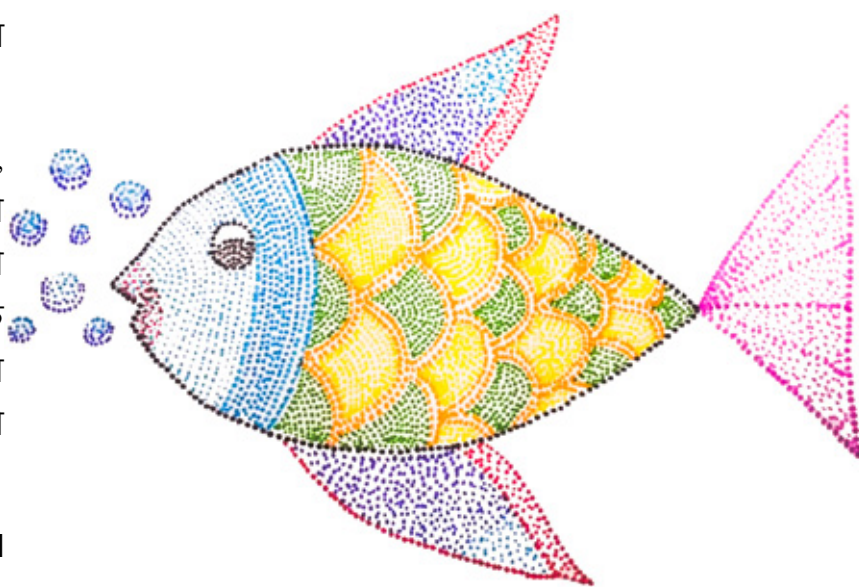
विश्वजीत रविन्द्र पंवार
छठवीं
प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मैं पहली बार जब तैरने के लिए गया तो मुझे लगा कि मुझे तैरना आएगा। लेकिन जब मैं पानी में उतरा तो मुझे बहुत डर लगा। मेरे पिताजी ने मेरी पीठ पर ड्रम बाँधा और उन्होंने मुझे पानी में छोड़ दिया। मुझे डर लगने लगा... इतना कि मैं डर के मारे रोने लगा।

फिर पिताजी ने मुझे प्रोत्साहन दिया, सहारा दिया तो मैं हाथ-पैर हिलाने लगा। पाँच दिनों के बाद पिताजी ने रस्सी बाँधी पीठ पर और पानी में फेंक दिया। तो मैं डूबने लगा और मैं बहुत ही डर गया। फिर मैं थोड़ा-थोड़ा तैरने लगा।

कुछ दिनों बाद मैं अच्छे-से तैरने लगा। तब से मुझे तैरने का शौक हुआ।

बचपन में जब बिजली चली जाती थी तो दादी बोलती थीं कि बिजली नानी के घर चली गई है। फिर क्या, चुहले या मोमबत्ती के पास सब इकट्ठे हो जाते और बहुत-सी बातें करते। कभी हाथ की परछाई से खेलते। बहुत मज़ा करते। परन्तु अब बिजली चली जाए तो हम सबसे पहले अपने फोन देखते हैं कि चार्जिंग कितनी है। और फिर बैटरी सेवर ऑन करते हैं। अगर चार्जिंग कम हो तो औरों को नोकिया के छोटे फोन से कॉल करते हैं कि तुम्हारे घर में लाइट है कि नहीं। अगर लाइट हो तो ना दिन देखते हैं ना रात और जिनके घर में लाइट हो वहाँ एकदम से पहुँच जाते हैं फोन चार्ज करने के लिए। अगर लाइट ना हो और फोन बन्द हो जाए तो आधी साँस बन्द हो जाती है। इसे बिजली की ज़रूरत कहें या फोन की लत?



चित्र: हिनल, स्लैम आउट लाउड, दिल्ली



चित्र: कृष्णा, सातवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल,
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

बारिश के हाल

कनिष्का अधिकारी
ग्यारहवीं
लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, उत्तराखण्ड

आजकल हमारे यहाँ लगातार बारिश हो रही है। इसके कारण जोंक लग रही हैं। जोंक से मुझे बहुत डर लगता है। पर अब मैं सोचती

हूँ कि हमें डरना नहीं चाहिए। जब हम गाय, बैल, बन्दर आदि जानवरों से नहीं डरते हैं तो जोंक तो बहुत छोटी जीव है, हमें उससे भी नहीं डरना चाहिए। बल्कि हमारे पास तो सब कुछ है, किसी के पास तो रहने के लिए घर तक नहीं है। और हमारे यहाँ इतनी बारिश तो नहीं हो रही है कि बाढ़ आ जाए। अगर दिल्ली की बात करूँ तो आजकल यमुना नदी का जल स्तर इतना बढ़ गया है कि आसपास के नगर भी बाढ़ ग्रसित हो गए हैं। नगरों में इतना पानी भर गया है कि जो लोग 5 फुट से ऊपर लम्बाई वाले हैं उनके भी कमर से ऊपर पानी आ गया है। जिन सड़कों पर गाड़ियाँ चलती थीं उन पर अब नावें चल रही हैं। सोचो, जब सड़कों और नगरों में यह हाल है तो यमुना नदी का क्या हाल होगा। लोग कैसे रह रहे होंगे, क्या खा रहे होंगे, सच में इस दयनीय स्थिति को सुनकर तो मेरा मन बेचैन हुआ जा रहा है। और एक हम हैं जो छोटे-से जीव जोंक से डरते हैं। पर अब मैंने जोंकों से डरना छोड़ दिया है।



2. 5 (15 x 5 = 75)

3.

गुरुवार को एलीना ने 50 बार रस्सी कूदी थी। चूँकि वो हर दिन पिछले दिन से 10 बार ज़्यादा रस्सी कूदती है। इसलिए बुधवार को उसने 50 से 10 बार कम रस्सी कूदी होगी और शुक्रवार को 50 से 10 बार ज़्यादा। यानी कि उसने सोमवार को 20, मंगलवार को 30, बुधवार को 40, गुरुवार को 50 और शुक्रवार को 60 बार रस्सी कूदी। तो कुल मिलाकर उसने 20+30+40+50+60=200 बार रस्सी कूदी।

1. ध्यान-से देखो हर पंक्ति के बीच के गोले में लिखी संख्या दोनों ओर की संख्याओं के योगफल की आधी है। इसलिए, जवाब होगा: $9 + 3 = 12 (\div 2) = 6$

5. नहीं, क्योंकि रॉनी की बहनें डॉक्टर थीं।

8. $9 \times 1 + 9 \times 6$

9. ऐसा करने के तीन तरीके हैं:

- 1 व 4 गेंदों वाले झोले को छोटे बक्से में रखो और 2, 3 व 5 गेंदों वाले झोलों को बड़े बक्सों में।
- 2 व 3 गेंदों वाले झोलों को छोटे बक्से में रखो और 1, 4 व 5 गेंदों वाले झोलों को बड़े बक्सों में।
- 5 गेंदों वाले झोले के छोटे बक्से में रखो और बाकी सारे झोलों को बड़े बक्से में।

6. हाँ, क्योंकि वे एक-दूसरे के सामने खड़े थे।



4.

जु	ति	झी	सा	ना	इ	ल्ली	ब	ची
ग	त	दी	गु	ब	रै	ला	र	टी
नू	ली	म	छ	र	सि	बी	बू	टि
आ	म	क	डी	दी	र	बि	टा	डु
जूँ	धु	घु	न	ब	सा	छू	कि	पा
रे	म	जों	हू	ख	ट	म	ल	जा
प	क्खी	टी	क	सि	जू	भौं	नी	या
तं	ति	ल	च	ट्टा	दा	रा	तै	ग
गा	ल	घों	घा	डा	ल	त	म	नू

7.

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1पै	हु	ल	2म	3कै	4कै
थि			5हो	हि	ग
6वा	न		7ना	क	8न
9वा	जा				
मि		10कै	नी	11क	ज
12न	सं	सि		13जा	न
		14वा	र	कल	
		15वा	न		16वा
17कै	18पु	ली		19क	20सा
					दी
	म		21बो	त	ल
					मा
22द	क	सा	रा	23म	का
					न

सुडोकू-69 का जवाब

2	1	7	6	9	8	4	5	3
6	9	5	2	4	3	7	1	8
4	8	3	5	1	7	2	6	9
5	6	4	7	3	2	8	9	1
9	7	1	8	6	4	3	2	5
3	2	8	9	5	1	6	7	4
1	4	9	3	2	6	5	8	7
8	5	6	4	7	9	1	3	2
7	3	2	1	8	5	9	4	6

हजारों साल बाद भी ज़िन्दा



रूस के साइबीरिया में 46,000 सालों से बर्फ में जमी दो कृमियाँ मिलीं। 2018 में पर्माफ्रॉस्ट (हजारों सालों से बर्फ में जमी हुई ज़मीन) को खोदने पर 40 मीटर की गहराई पर एक गोफर (चूहे, गिलहरी जैसा एक जीव) मिला। उसी में ये दो नेमाटोड कृमियाँ पाई गईं। ये सूक्ष्मजीव दुनिया भर की मिट्टी-पानी में पाए जाते हैं। पिघलने देने पर वैज्ञानिकों ने देखा कि ये हिलने लगे हैं यानी कि ये जीवित थे। अब तो ये दोनों कृमि ज़िन्दा नहीं रहे। लेकिन इनके शोध से यह पता चला है कि जमने के बाद भी ये इतने समय के लिए ज़िन्दा कैसे रह पाए। इससे पहले मिले नेमाटोड जमने के बाद 25 साल तक ही बर्फ में रह पाए हैं।

उम्र के साथ तुम्हारी आवाज़ भी बदलती है

ये तो हमें पता है कि हार्मोन के कारण किशोरावस्था में हमारी आवाज़ बदलती है, खासकर लड़कों की। लेकिन बढ़ती उम्र के साथ भी कई लोगों की आवाज़ें बदलती हैं। ऐसा इसलिए कि हमारे स्वर-रज्जु (vocal cord) कम लचीले हो जाते हैं। इससे आवाज़ में फर्क सुनने को मिलता है। उम्र बढ़ने के अलावा कुछ दवाइयों को लेने से, कुछ बीमारियों और घाव के कारण भी ऐसा हो सकता है। लेकिन गायक लोगों को में ऐसा कम होता है। ये लोग अपने स्वर-रज्जुओं का बढ़िया इस्तेमाल करते हुए उन्हें स्वस्थ बनाए रखते हैं। तो बढ़ती उम्र में अगर तुम्हें अपनी आवाज़ को स्वस्थ रखना है तो गाना गाओ और गाते रहो।



इस जगह के लोग ज़मीन के नीचे रहते हैं



ऑस्ट्रेलिया का एक शहर है – कूबर पेडी। स्थानीय भाषा में इसका मतलब है ‘गोरे लोग जो ज़मीन के नीचे रहते हैं’। यहाँ पर ओपल (एक रत्न) की खदानों में शहर के 60% लोगों ने अपना घर बनाया है। ठण्ड में ये कुछ अजीब लगता है। लेकिन गर्मियों में जब तापमान 52 डिग्री सेल्सियस तक पहुँचता है तो लोगों का यह निर्णय समझ में आता है। अक्सर लोगों के घरों का पता सिर्फ इस बात से चलता है कि हवा के लिए बनाए गए चिमनी जैसे शाफ्ट ज़मीन के ऊपर दिखते हैं।



गोला बोला

वरुण ग्रोवर

चित्र: प्रिया कुरियन

दुनिया क्या है ऊन का गोला
और बगल में मून का गोला

दोनों गोलों को पकड़ा है
अम्बर ने कुछ हल्का पोला

घूम-घूम के नाच-नाच के
दोनों गोलों ने ये बोला

मैं तुझसे तू मुझसे अटका
जैसे कन्धे अटके झोला



प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रेक्स डी रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन